कुमाऊँ के संस्कार गीत

संकलन : श्रीमती विद्या भट्ट

सम्पादन : डा. सुरेश पंत

कुमाऊँ के संस्कार गीत

संकलन : *श्रीमती विद्याभट्ट*
सम्पादन : *डा. सुरेश पंत*

उत्तरीय
सी-4सी/10, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

कुमाऊँ के संस्कार गीत

संकलन :
श्रीमती विद्या भट्ट

सहयोग :
डा० मदन चन्द्र भट्ट
अध्यक्ष, उत्तराखण्ड शोध संस्थान
पिथौरागढ़ इकाई

प्रथम संस्करण- 1997, 500 प्रतियाँ

मूल्य : 25.00 रुपये

प्रकाशक : उत्तरांय
सी-4 सी 10, [illegible] 110058

लेज़रटाईपसैटिंग
शिवा ग्राफिक्स, [illegible] नई दिल्ली 59

KUMAON KE SANSKAR GEET
(Collection of Kumaoni Folk Songs)

भूमिका

कुमाऊँ में नामकरण अन्नप्राशन, जन्मदिन, चूड़ाकर्म, ब्रतबन्ध, विवाह आदि संस्कारों के अवसर पर जो परम्परागत गीत प्रचलित हैं, उनका मैंने इस पुस्तक में संकलन किया है ताकि ये लुप्त न होने पाएँ। इनमें से अनेक कर्मकाण्ड के मंत्रों का कुमाऊँ की फाग शैली में भावानुवाद हैं। मंत्रों की तरह ही पवित्र होने के कारण इन्हें 'शकुन आँखर' (शुभ वाणी) कहा जाता है। विविध संस्कारों के समय महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से गाये जाने वाले कुछ गीत आज से लगभग आठ सौ वर्ष पुराने हैं क्योंकि 'दियड़ा' (दीपक गीत) में कत्यूरी राज्य का उल्लेख है। तब से लेकर वर्तमान तक की कुमाऊँ की सांस्कृतिक मान्यतायें इनमें सुरक्षित हैं।

संस्कार गीतों के अतिरिक्त कुमाऊँ में चातुर्मास में महिलाओं में जागरण गीत प्रचलित हैं। सायंकाल तुलसी के वृन्दावन में दीपक जलाकर सामूहिक रूप से जागरण गीतों को गाया जाता है। ये कृष्णभक्ति के गीत हैं। कुमाऊँ के लोक धर्म, लोक-गीत और लोक-संगीत की यह युग-युगीन सांस्कृतिक परम्परा अनन्त काल तक चलती रहे—इसी कामना के साथ मैंने इनका संकलन किया है।

सर्वप्रथम मैं अपने पतिदेव का आभार व्यक्त करना चाहूँगी जिन्होंने पारिवारिक दायित्व निर्वाह के साथ-साथ इसके संकलन में मुझे प्रेरणा और सहयोग प्रदान किया। पांडुलिपि तैयार करने में डा० मदन भट्ट का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। डा० सुरेश पंत ने इसकी पांडुलिपि को आद्योपांत देखा, उसका संपादन-शोधन किया और उसे मूर्त रूप प्रदान किया। चि० मनोज की बड़ी इच्छा रही कि यह संकलन प्रकाशित हो और वह सफल रहा। इनका आभार इन्हें आशीर्वाद देकर व्यक्त करती है।

9, लुंठयूड़ा मार्ग, पिथौरागढ़
विषुवत् संक्रान्ति, 1977

श्रीमती विद्या भट्ट

समर्पण

पूजनीय सास जी
श्रीमती गंगादेवी (18921987 ई.) की पुण्यस्मृति
को जिनके 95 वर्ष के कर्मठ जीवन से मुझे
प्रेरणा मिली और जिनके सान्निध्य से इन
परम्परागत गीतों का संकलन कर पाई।

विद्या भट्ट

संपादकीय

लोकगीत किसी भी अंचल विशेष की सांस्कृतिक पहचान होते हैं। उत्तराखंड के लोकगीतों के बारे में एक कदम आगे बढ़कर कहा जा सकता है कि इन गीतों में भारत के अनेक अंचलों के मणि-माणिक भी जड़े हैं- विशेषकर संस्कार गीतों में मैथिली, मगही, अवधी और ब्रज के लोकगीत ही नहीं, सूर, तुलसी, चन्द्रसखी, मीरा आदि के पद भी कभी मूल तो कभी प्रक्षिप्त रूप में गाए जाते हैं। यहाँ तक कि लोकपर्व सातूँ-आठूँ के 'कुकुड़ी, माकुड़ी' गीत में कहीं द्रविड़, संस्कृति की तलछट लगती है!

कहते हैं गुरु नानक देव ने एक गाँव को उजड़ने का 'आशीर्वाद' दिया था। उत्तराखंड के साथ भी ऐसा ही हुआ लगता है। आर्थिक विवशता से पर्वतीय जन पर्वतों से उजड़ कर मैदानों में, दूर-दराज के नगरों कस्बों में जा बसे हैं। पहाड़ की स्मृति 'उजड़ बसने' वाली पीढ़ी के मन को कचोटती रहती है और नई पीढ़ी उसे दादी की कहानियों के साथ सँजो लेती है। पर जब कभी परिवार में कोई छोटा-बड़ा उत्सव होता है तो शुरू होती है जड़ों की तलाश और जड़ों तक पहुंचने, उनसे जुड़ने का रास्ता बनते हैं नारी समुदाय के गीत जो आज भी वाचिक परंपरा में जीवित हैं।

कुश से बने सृष्टिकर्ता 'ब्रह्मा', रंगवाली पिछौड़, गोल्ल की अशीक, भूमियाँ का प्रसाद अब देश की सीमा के बाहर लंदन, न्यूयार्क या पैरिस भी पहुंचते हैं। मन में जब 'निशास' लगता है तो गीत की कोई पंक्ति खुद-ब-खुद होंठों पर थिरकने लगती हैं। नई पीढ़ी को यह दाय सौंपने के अनेक प्रयास हुए हैं। एक प्रयास यह संकलन भी है।

संग्रहकर्ता का संबध पिथौरागढ़ की सोर्याली बोली से है, पर मातृ बोली 'गंगोली' है जिसे 'प्रतिभादर्शन' ने केन्द्रीय कुमाऊँनी कहा है। सो, गीतों में कहीं-कहीं दोनों छवियाँ हैं। उनमें एकरूपता लाना उनके साथ अत्याचार होता। फिर ब्रज, मगही के गीतों में कुमाउँनी पुट भी है। अत: इन गीतों के संपादन में मैंने प्रयास यही किया है कि मूल उच्चरित रूप यथासंभव बना रहे।

-सुरेश पंत

विषय सूची

1.	**गणेश जी का भजन**—गाइए गणपति जगवन्दन	1
2.	**गणेश जी का भजन**—नाचत आए गणपति आनंद भरे	1
3.	**देवी का भजन**— जै जै जै जग जननी, शरण तुम्हारी आई	2
4.	**दीपक गीत**— माई री मन्दिरुवा में दीपक बारो	3
5.	**तुलसी-दीपक गीत**—बालिहारी सखियो दीपक भवन में	3
6.	**श्रीकृष्ण भजन**—आज मेरे कहाँ अटके गिरिधारी	4
7.	**तुलसी भजन**—तुलसा महारानी नमो नमो	5
8.	तुलसा ने तप कीन्हों राम मिलोरी	6
9.	**श्री कृष्ण भजन**—रुन झुन, रुन झुन गोविन्द आवै	6
10.	सांझ भई घर आयो न कन्हैया	7
11.	लचक चलत एजी, लचक चलत एजी	7
12.	नाचत आए मटकिया भर के	8
13.	श्री राधे रानी दे डारो बन्सी मोरी	8
14.	नंद नंदन जी को भोग लगावें	9
15.	हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों	9
16.	**हनुमान भजन**—पवनसुत कवन दिशा से आये	10
17.	**श्री राम भजन**—ठुमकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियाँ	11
18.	**श्री कृष्ण भजन**—मेरे मन अटकी, मेरे दिल अटकी	11
19.	**आरती-चारों धाम की**—चलो हो साथी गंगासागर धाम	12
20.	**रास भजन**—रास मंडल में गये शिव शङ्कर गोपी रूप धारण कर	12
21.	**प्रभाती**—प्रात समय रघुवर जगावें कौशल्या महतारी	13
22.	**प्रभाती**—तुलसी सीताराम कृपालु, कौन यतन से मैं हरि को रिझाऊँ	13
23.	**प्रभाती**—प्रात समय प्रभु भजन करि हैं	14
24.	**प्रभाती**—दर्शन दो भगवान दीना मगन भये	15
25.	समुंदर नहान गिरिजा आई	15
26.	फूलों से मथुरा छाई आज हरि, फूलों से मथुरा छाई	16
27.	मो को चाकर राखों सांवलिया गिरिधारी	16
28.	मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरा न कोई	17
29.	**श्रीराम भजन**—सीताराम सीताराम सीताराम कहिए	17

30.	ओम् जय श्री राधा, जय श्री कृष्ण श्री राधाकृष्णाय नमः	[illegible]
31.	**श्री कृष्ण भजन**—राधा मंगल गाव श्री कृष्ण जी के संग	[illegible]
32.	**श्री कृष्ण भजन**— फूल फूलन मैं हरि को देखा	[illegible]
33.	**भजन प्रभाती**—जय नारायण ब्रह्म परायण श्रीपति	[illegible]
34.	आवनरी मेरी संग सहेली, तुलसी बोवन जाइरी	[illegible]
35.	बसनो श्री बिन्द्रावन को नीको, नीको नाम हरी को	
36.	भजनो श्रीराम नाम को नीको	[illegible]
37.	आज रहो शबरी के घर रामा	[illegible]
38.	**दुर्गा माँ का गीत**—जय दुर्गे दुर्गति परिहारिणी	[illegible]
39.	**शकुनाखर गीत**—शकुना दे काज ए अती नीका	24
40.	**श्री गणेश जी का गीत**—जय जय गणपती	[illegible]
41.	**हल्दी लगाने का गीत**—उबटन दलियो मलियो मैल छुड़ाइये	[illegible]
42.	श्री गणपति नाइये, तेल पैराइये	26
43.	**निमंत्रण गीत**—प्रात जो न्यूतूँ मैं सूरिज	27
44.	**मातृपूजन गीत**—केरे लोक उपजन माई ए मात्रा	28
45.	**वसोधारा गीत**—वसो धारा वसो धारा धार उधारा	28
46.	**पुण्यावचन गीत**—रामीचन्द्र, लक्ष्मण दीना छन	29
47	**(पितृपूजन आशीष)**—जाना जाना भँवरिला मांथी लोक [illegible]	29
48.	**कलश थापन गीत**—धरती धरम ले कलश थापि ले	31
49.	**नवग्रह गीत**—गावन्त जै मंगल बोलन्त शुभ मंगल	33
50.	**जीवमातृ की आरती सेली गीत**—माई सोने को गड़वा ले हो	34
51.	**कलश उठाने का गीत**—चार ही कलश ए आठ ही ब्राह्मण ए	35
52.	**संध्या दीपक गीत**—सांझ पड़ी सांझवाली पाया चली ऐंन	35
53.	**संध्या गीत**—गढ़ रे, कत्यूरी गढ़ दीयो गढ़ायो	36
54.	**काज खिलने का गीत**—कारज खिलि रहे आज इनूँ घरी	36
55.	**बधावा गीत**—रामीचन्द्र दरबार लछमन दरबार	37
56.	**कृष्ण जन्म गीत**—आज नंद घर भई है भीड़	38
57	**षष्ठी पूजा गीत**—कौन महल में बाजो री बाजो	38
58.	**बधाई गीत**—मदन मनोहर मानिये शाहिजादे बरना	39
59.	**जनेऊ का गीत**—कैले तेरी बाला बटू लटिया न्यौते छ	40
60.	**होम के समय का गीत**—घिय की गगरी भराओ रे बटुवा	41
61.	**यज्ञशाला में दीपक गीत**—एक जग दीयड़ा जाग हो	41
62.	**जनेऊ गीत**—कैले तेरी बाला बटू जनेऊ बणै छ	42

63.	**बधावा गीत**—बधावा आंगना बाजे, गुलाल आंगना बाजे	43
64.	**स्वांलपथाई गीत**—कौइ ऊ कनुडकी गोवा ऊ या मन्य मिल	43
65.	**लाडू बांटने का गीत**—लाडू जो बांटे में दूणा दूणो	44
66.	**रंगाली का गीत**—फागुन तेरे मौसम में रंग लाल पाली आई	44
67.	आज मेरे अंगना में रंग बरसत है	45
68.	**ताई लगने का गीत**—को ए ऊ ताई लगाइए	46
69.	**सेहरा गीत**—सिंहरा गुदाय लाए हो मालनियाँ	46
70.	**ससुराल जाते समय का गीत**—ससुराल जइयो मेरे लाल बन्ना	47
71.	**दूध का मोल गीत**—दूध का कर मोल बन्ने	48
72.	**धूलि अर्घ का गीत**—चल तुम्हीं रामचिन्द्र, चल तुम्हीं लछीमन	48
73.	**धूलि अर्घगीत (सिटौल)**—छाजा में बैठी समधिण पूछे	49
74.	**कन्यादान में बैठने का गीत**—चन्दन चौकी बैठ लाडली	49
75.	बाबुल खोलो परद वर देखिए,	50
76.	**जुहरा गीत**—को एऊ जुहरा जीति लाए	50
77.	**कन्या विदाई गीत**—नदिया के ढिग ढिग निकसी लडैती	51
78.	**बारात घर पहुँचने पर गीत**—को बेटी ल्याई है	52
79.	**बधावा गीत आशीष का**—युग युग जीवे तेरा बन्ना	52
80.	**नील पूजन गीत**—स्यो बूजा स्यो पूजा माई गंगा	53
81.	**जल पूजन गीत**—ए जल पूजन, अहो जल पूजन जाय	53
82.	**सौहर गीत/रामजन्म**—दोहद ठाड़ी कौशल्या	54
83.	**कृष्ण जन्म गीत**—आज राति नंदनंदन प्रगटे	55
84.	**कृष्ण जन्म गीत**—तीन लोक के नाथ मथुरा हरि जन्मे	55
85.	**झगुली गीत/अन्नप्राशन**—अम्ब जो काहि अम्बन गई ए	56
86.	**श्री कृष्ण जन्म गीत**—आनंद यशुमति मैया	57
87.	**बालक्रीड़ा गीत**—कौशल्या के चारों लाल, दिन दिन प्यारे लगें	58
88.	**आठूँ-सातूँ के गीत**	59
89.	बिरुड़ी भिगाने का गीत	61
90.	**सातूँ गीत**—माकुड़ी की पूजा सईयाँ हो	61
91.	**सातूँ गीत**—लाली बोलियो ककुड़ी का फूल	62
92.	**सातूँ गीत**—पारम पलना में बैठी पूछ मत	62
93.	**आठूँ गीत**—दियो बाल में मन बिरुड़ी देजो	63
94.	**लीला गीत**—श्री कृष्ण लीला गीत	64
95.	श्री भागवत लीला	67

जागरण गीत

(1) गणेश जी का भजन

गाइए गणपति जगवन्दन!
शङ्करसुवन भवानी के नन्दन!
सिद्धि सदन गजवदन विनायक!
कृपासिन्धु सुन्दर सबलायक!

मोदक प्रिय मुदमंगलदाता!
विद्यावारिधि बुद्धि विधाता!

माँगत तुलसीदास कर जोरी!
बसहुँ राम सिया मन मोरे!
गाइए गणपति जगवन्दन!!

(2)

नाचत आए गणपति आनंद भए!
खेलत आए गणपति आनंद भए!
मूश सवारी में गणपति आए,
संग में लाए रिद्धि, सिद्धि, आनंद भए!!

बैल सवारी में शंभू जी आए!
संग में लाये पारवती!
गरुड़ सवारी में विष्णु जी आए!
संग में लाये लक्ष्मी जी, आनंद भए!!

हंस सवारी में ब्रह्मा जी आए!
संग में लाये सावित्री जी आनंद भय !
सिंह सवारी में देवी जी आई!
गज मोती चौक पुराए, आनंद भए!!
आरती मंगल गाए, आनंद भए!!

(3)

देवी का भजन

जै जै जै जै जै जग जननी,
शरण तुम्हारी आई!
शरण तुम्हारी आई री मैया, शरण तुम्हारी आई!
मूश सिंहासन बैठिके मैया, गणपति रूप धराए!
रिद्धि, सिद्धि दोऊ चँवर डुलावैं, पहिलो [illegible]।
पहिलो काज सँवारे मैया, पहिलो
हंस सिंहासन बैठि के मैया, ब्रह्मा रूप धराए!
चार वेद जाके मुख सोहे, चार वेद यश गाये, जै जै जै
गरुड़ सिंहासन बैठि के मैया, विष्णु रूप धराए!
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, मुख पर बीन बजाए!
मुख पर बीन बजाए री मैया, मुख पर जै जै जै
बैल सिंहासन बैठि के मैया शिवजी रूप धराए!
जटाजूट सिर गंग विराजै शेष नाग लिपटाए!
शेषनाग लिपटाए री मैया, शेषनाग जै जै जै
सिंह सिंहासन बैठि के मैया, दुर्गारूप धराये,
रामकृष्ण तेरी करें आरती, तीन लोक जस गाये।
तीन लोक जस गाये री मैया, तीन लोक जै जै जै

(4)

दीपक गीत

माई री मन्दिरुवा में दीपक बारो, सखी री, मन्दिरुवा .....
काहे को दीपक काहे की बाती, काहे को तेल जलाओरी, मन्दिरुवा
माटी को दीपक रूवा की बाती, तील को तेल जलाओरी .....
काहे को मन्दिर काहे को मढ़ैया, काहे को छत्र चढ़ाओ!
सोने को मन्दिर,रूप मढ़ैया, चाँदी को छत्र चढ़ाओ री मन्दिरुवा .....

हर-हर गोबर मन्दिर लिपाऊँ, गज मोती चौक पुराऊँ!
नारियल भेंट चढ़ाऊँ री मैया लड्डू भोग लगाऊँ, मन्दिरुवा .....
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, दासी के प्रभु गिरिधर नागर,
चरणकमल लिपटाऊँ, मन्दिरुवा में दीपक वारो!!

(5)

तुलसी-दीपक गीत

बालोरी सखियो दीपक भवन में!
जलाओरी सखियो दीपक भवन में!!
सूरज गगन में छिपा रहा है!
छिप गया सूरज, निकल आये तारे!
चन्दा की ज्योति निराली भवन में!
काहे को दीपक काहे की बाती!
काहे को तेल जलाया भवन में!
सोने को दीपक रूप की बाती!!
प्रेम को तेल जलाया भवन में!
काहे को तोषक काहे हो तकिया!!
काहे को सेज लगाया भवन में!

अदिलस को तोषक मखमल को तकिया!!
पुष्पन सेज लगाया भवन में !! बालोरी
काहे को फूल फल काहे को भेंटा
काहे की भोग लगाया भवन में!
नारियल को फूल फल,सुपारी को भेंटा!
लड्डू को भोग लगाया भवन में!! बालोरी
काहे को जप-तप, काहे को सुमिरन
काहे को ध्यान लगाया भवन में!
हरिजी को जपतप, प्रभुजी को सुमिरन,
मैया को ध्यान लगाया भवन में!
चरणों का ध्यान लगाया भवन में !!

(6)

श्रीकृष्ण भजन

आज मेरे कहाँ अटके गिरिधारी। सदवारी मेरे
खोजत खोजत फिरत यशोदा, घर-घर करत पुछारी!! आज मेरे
कारण कवन लाल नहिं आये, कंस काल भय भारी!!
जूथ जूथ सखियाँ चलि आईं, देत यशौदा जी को गारी।
नंदनंदन जी को जोर जुठौनो, खेचत अंचल सारी!! आज मेरे
रुनुक, झुनक मोहन चलि आये, नयन नीर भरि वारी।
मुरुली मेरी छीन लई है, इन सखियन मोहे मारी! आज मेरे
हंसि मुसकाय के कहत राधे जी, दोस नाहीं हमारा!
श्याम सुंदर के दरसन करने, चन्द्र सखी सब आई!!
चरन कमल बलिहारी!! आज मेरे

(7)

तुलसी भजन

तुलसा महारानी नमो नमो!
हरि जी की पटरानी नमो नमो!!

जाके दरस परस अघ नासे, महिमा वेद पुराण बखानी! नमो
साखा पत्र, मंजरी कोमल, श्रीपति चरणकमल लिपटानी!! नमो
तुलसा महारानी नमो! नमो .....

धन तुलसा पूरण तप कीन्हों, शालिग्राम भई पटरानी! नमो .....
धूपदीप नैवद्य आरती, पुष्पन की बरषा बरसानी!
छप्पन भोग धर्‌यो हरि आगे, बिनु तुलसा हरि एक न मानी!! नमो .....
तुलसा महारानी नमो! नमो!.....

शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक, खोजत फिरत महामुनि ज्ञानी!! नमो।
प्रेम प्रीति कर हरि बस कीन्हों, साँवरी सूरत मेरे मन हरसानी! नमो!
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, भक्ति दान दीजो महारानी!! नमो .....
तुलसा महारानी नमो! नमो।

(8)

तुलसा ने तप कीन्हों राम मिलोरी!
राम मिलो भगवान मिलोरी! कृष्ण मिलोरी!
नाम जलन्धर जाति दैत्य है,
उन तुलसा तप छीन कियोरी!! तुलसा ने .....

एक चरण से खड़ी रानी तुलसा,
शिव शङ्कर स्वामी आय मिलोरी,
जो तुम स्वामी मोसे छल-बल कीन्हों!
मलमुख तुलसा ने शाप दियोरी! तुलसा ने .....
कलयुग में, तुलसा वृक्ष बनोरी

तुम ही शिला मेरे शीष चढ़ोगी
शालीगिराम जी के शीष चढ़ोगी
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि!
हरि चरणन मेरो ध्यान लगोरी!
प्रभु के चरण मेरो ध्यान लगोरी! तुलसा ने

(9)

श्री कृष्ण भजन

रुन झुन, रुन झुन गोविन्द आवै। रुन
हरि के हाथ लकुट मुख मुरली बजावै!!
दूर खेलन जनि जाओ प्यारे ललना!
साँझ भई घर आओ प्यारे ललना!!
कौन के हाथ में तुलसी को बिरवा!
कौन के अंगना में खेलें प्यारे ललना!!
देवकी के अंगना में तुलसी को बिरवा!
यशोदा के अंगना में खेलें प्यारे ललना!!
साँझ भई घर आओ प्यारे ललना!!
कौन के छैया, कौन के भैया!
कौन महर के कुँवर कन्हैया ?
देवकी के छैया बलदाऊजी के भैया!
नंदराय जी के कुँवर कन्हैया!!
यमुना के नीर तीर धेनु चरावे!
गौउन के संग विहरत आवै!!
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै!
मुख मुरली कुंडल झलकावै!!
मात यशोदा करत आरती!
सुर नर मुनि जन कृष्ण गुण गावैं!!
सूरदास प्रभु ध्यान धरत है!
तीन लोक में खेले प्यारे ललना!!

(10)

सांझ भई धर आयो न कन्हैया,
कहाँ ढूँढूँ मैं कन्हैया सांझ भई!! कहाँ .....
कहाँ गई गैय्या, कहाँ गई बछिया!
कहाँ गयो मेरो कृष्ण कन्हैया!
मेरो बंशी बजैया !! सांझ .....
वन गई गैय्या, वन ही में बछिया!
वन ही में मेरो कुँवर कन्हैया!! सांझ भई .....
आगे आगे गैय्या पीछे पीछे बछिया,
ता पीछे मेरो कुँवर कन्हैया, नंद जी को छैया! सांझ भई .....
कहाँ रहै गैय्या कहाँ रहै बछिया,
कहाँ रहै मेरो कुँवर कन्हैया ! सांझ भई .....
गोठ रहै गैय्या गौशाला रहै बछिया,
रंग महल मेरो कुँवर कन्हैया ! साँझ भई .....
बिन्द्रावन की कुंज गलिन में,
खड़ी यशोदा मैया, लेत बलैया!! सांझ भई .....
चन्द्र सखी भजो बाल कृष्ण छवि!
हरि चरण राधे चलि जैय्या!! सांझ भई .....
कहाँ ढूंढूं री कन्हैया सांझ भई!!

(11)

लचक चलत एजी, लचक चलत एजी।
जीवन मुख-दाई!! कन्हैया!!
मोर मुकुट, मकराकृत कुंडल,
मुख मुरली बोले मृदुवानी! लचक चलत
चतुर भुजा रूप धरि आए, आए गिरिधारी!
आरती गाई नंद जी की महारानी! लचक चलत
चन्द्र सखी भजो बालकृष्ण छवि,
हरि चरण राधा लिपटानी!! लचक चलत .....

(12)

नाचत आए मटकिया भर के!
नाचत आए दोहनियाँ भर के!!

हरि जी के कारन राधे दइया जमाया!
लून मिरच लाई मालन मथके!! नाचत .....

घर-घर से सब ग्वालन निकसी!
हरि जी के अंगना में आए घर से!! नाचत .....

चन्द्रमखी भजो बालकृष्ण छवि
हरि के चरण राधा चित धर के! नाचत ....

(13)

श्री राधे रानी दे डारो बन्सी मोरी!! दे डारो .....
या बन्सी में मेरो प्राण बसत है, सो बन्सी भई चोरी!

काहे से गाऊँ राधे, काहे से बजाऊँ
काहे से लाऊँ गैयां घेरी!! दे डारो .....

मुख से गावो, हाथों से बजाओ
लकुटी से लाओ गैय्या घेरी ! राधे रानी दे डारो .....

हा हा! करत तोरे पैंय्या पड़त हूँ
तरस खाओ प्यारी मोरी !! राधे

चन्द्र सखी भजो बाल कृष्ण छवि
हरि चरना कर जोरी !! राधे रानी दे डारो .....

(14)

नंद नंदन जी को भोग लगावैं!
महा शंख धुनि घंट बजावैं!! नंद नंदन जी को.....
अमृतभोक्ता श्री यदुराई!
छप्पन भोग श्री लक्ष्मी लाई!
सत भामा जी ने बता दीन्हों! हाँ बताय दीन्हो!!
चन्दन जल से भवन सिंचाये!
सखा सहित हरि जेवन आये! नंद नंदन जी को...
दूध पाक पकवान मिठाई छप्पन,
छप्पन भोग छत्तीसौं व्यंजन
रुचि-रुचि सो जैंवै यदुनंदन
साग-पात जिनके जो होई
अमृत करी जैंवे हरि सोई!!
ललिता बिसाखा चँवर दुलावै!
जनम-जनम हरि को जस गावै!! नंदनंदन जी को.....

(15)

हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों !! प्रभु तुम बहुत.....
साधन धाम विविध दुर्लभ तनु
मोहि कृपा करि दीन्हों !! हरि तुम.....
कोटिहुँ मुख कहि जाय न प्रभु को
एक एक उपकारो!!
तदपि नाथ कछु और मागिहूँ
दीजै परम उदारो! हरि तुम.....
विषय-वारि भिन्न नहिं होवै!
होत कबहुँ पल एका!!
ताते सहिय विपति अति दारुण
जन्मत योनि अनेका!! हरि तुम.....

कृपा डोरि बन्सीपद अंकुश
परम प्रेम मृदु चारो!!
येहि विधि वेगि हरहु दुःख मेरो
कौतुक राय तुम्हारो!! हरि तुम .....
है क्षिति विदित उपाय सकल सुर
केहि दिन करिय निहारो
तुलसीदास आशा रघुवर की
चरण कमल को सहारो! हरि तुम .....

(16)

हनुमान भजन

पवनसुत कवन दिशा से आये!! महावली कवन .....
उत्तराखण्ड अयोध्या नगरी, चित्रकूट से आये!! महाबली

कवन के पुत्र, कवन के पायक, कवन कुँवर के पठाये!!
अंजनीपुत्र, रामजी के पायक, लखन कुँवर के पठाये!! पवनसुत

कहाँ तेरे राम, कहाँ तेरे लक्षमण, कहाँ से मुद्रिका लाये!!
वन ही राम, वन ही में लक्षमण, बन ही से मुद्रिका लाये!! पवनसुत

कौन के सत से सागर उतरो, कौन संदेशा लाये!!
माता के सत से सागर उतरो रामको संदेशा लाये!! पवनसुत

सुनि सुनि वचन सिया वनचरके, नयन नीर भरि आये!
अब जनि सोच करै मेरी माता राम जी सहित दल आये!

रावण मारि अब ही लै जाऊँ रामजी आज्ञा नहिं पाये!!
तुलसीदास आशा रघुवर की चरण कमल चित लाये!! पवनसुत

(17)

श्रीराम भजन

ठुमकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियाँ! बाजत .....
किलकिलाय उठत धाय गिरत भूमि लटपटाय
धाय माय गोद लेत दसरथ की रनियाँ!! ठुमकि .....
विद्रुम से अरून अधर, बोलत मृदु वचन मधुर!
सुभग नासिका के बीच लटकत लटकनियाँ! ठुमकि .....
मेवा मोदक रसाल, मन भावै सो लेहो लाल!
और लेहा रुचिर पान, चंचल झुनझुनियाँ! ठुमकि .....
तुलसीदास अति आनंद निरखि के मुखारविन्द
रघुवर की छवि निहार रघुवर मुख बनियाँ!!
ठुमकि चलत .....

(18)

श्रीकृष्ण भजन

मेरे मन अटकी, मेरे दिल अटकी
ए मुकुट की लटक, मेरे मन मेरे दिल अटकी!
माथे मुकुट खोर चन्दन की सोभा है पीरे पटकी!
शंख चक्र गदा पदम विराजे, गुंज माल मेरे हिय अटकी!! मेरे
अन्तरधान भये गोपियन में, सुध न रही जुमनातट की!
पात-पात विन्द्रावन ढूढें, कुंज-कुंजन राधा भटकी!! मेरे मन
जमुना तीरे धेनु चरावैं, राह लगी बन्शीतट की!
फूलन बीच कदम की डाली, गोपियन की मटकी चटकी!! मेरे
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, जानत हो सब घट-घट की!! मेरे

(19)

आरती-चारों धाम की

चलो हो साधो गंगासागार धाम!
चलो हो सन्तो गंगासागर नहाइये!!

दर्शन दो जगन्नाथ स्वामी, आवागमन मिटाइये!!
कौन दिशा जगन्नाथ स्वामी, कौन दिशा रामनाथ ज्यू!!
पूरब दिशा जगन्नाथ स्वामी, दक्षिण दिशा रामनाथ ज्यू!!
कौन कारण जगन्नाथ स्वामी, कौन कारण रामनाथ ज्यू!!
भोग कारण जगन्नाथ स्वामी, योग कारण रामनाथ ज्यू!!
किहाँ चढ़त जगन्नाथ स्वामी, किहाँ चढ़त रामनाथ ज्यू!!
अटका चढ़त जगन्नाथ स्वामी, गंगाजल रामनाथ ज्यू!!
सुखसम्पत्ति जगन्नाथ स्वामी, मोक्ष दे रामनाथ ज्यू!!
जो यो आरती गाइये, आवागमन मिटाइये!!
गंगा सागार नहाइये!! चलो हो साधो गंगासागर धाम!!

(20)

रास भजन

रास मंडल में गये शिव शङ्कर गोपी रूप धराय के .....
गोपी रूप धराय के भोले गोपी रूप .....
करत सिंगार पहन आभूषण मस्तक तिलक लगाय के .....
मस्तक तिलक लगाय के भोले मस्तक तिलक .....
कड़े कड़े हढ़े और अनवर विछुवे, चले घूंघट लटकाय के .....
कहत पार्वती सुनो नाथ जी पछताओगे जाय के .....
अन्तरयामी पहचान लेंगे सो स्वामी राधा के .....
सो स्वामी राधा के!! रास मंडल .....
पार्वती की एक न मानी, चले नाथ हरसाय के .....
धन्य भाग्य गोपेश्वर उपजे, उपजे घर राजा के .....
सुनत बचन व्याकुल भये शिवजी, मन में भय अतिभारी!!
या कारण मैं सती भई, मुँह से बोलत नाहीं!!
रास मंडल में गये शिव . शंकर .....

(21)

प्रभाती

प्रात समय रघुवीर जगावैं कौशल्या महतारी!!
उठो लाल अब भोर भयो है, सुर नर मुनि हितकारी!!
ब्रह्मादिक नारद इन्द्रादिक सनकादिक ऋषि चारी!!
वाणी वेद विमल यश गावैं, रघुकुल जस विस्तारी!!
बन्दी जन गन्धर्व गुण गावैं, नाचत दे दे तारी!!
सैन सहित शिव द्वारे ठाड़े, होत कोलाहल भारी!!
सुनि प्रिय वचन उठे रघुनंदन नैनन नीर बहाये!!
चितवन अभय कियो सचराचर मुदित भये नर नारी!!
जागे भरत लखन रिपुसूदन जागी जनक दुलारी!!
भरत सत्रुहन चवर छत्र लिये जनकसुता लिये झारी!!
मेवा पान लिये कर लछिमन, भर कंचन की झारी!!
रतन सिंहासन मध्य विराजे, सुंदर अवध बिहारी!!
क्रीट मुंकुट कर धनुष विराजे कुंडल की छवि न्यारी!!
जै जै कार करत जन साधो, तन मन धन बलिहारी!!
तुलसीदास आशा रघुवर की, चरण कमल बलिहारी! प्रात समय

(22)

प्रभाती

तुलसी सीताराम कृपालु, कौन यतन से मैं हरि को रिझाऊँ!
प्रभु को रिझाऊँ!!
जिनके चरणतल गंग बिराजे, वा हरि को क्या मैं जल से नवाऊँ!!
जल को चढ़ाऊँ!!
नाभि कमल जिनके अनहद फूले
वा हरि को रामा, वा प्रभु को क्या मैं पुष्प चढ़ाऊँ!!
मैं हार चढ़ाऊँ!! तुलसी सीता
जिनके संग में लक्ष्मी विराजै वा हरि को रामा वा प्रभु को

क्या मैं द्रव्य चढ़ाऊँ! भैट चढ़ाऊँ! तुलसी.....
कोटि भानु जिनके मुँह सोहै वा हरि को रामा वा प्रभु को
क्या मैं दीप जलाऊँ, जोति जलाऊँ! तुलसी सीता
शंख चक्र कर धनुष विराजै वा हरि को रामा वा प्रभु को
क्या मैं शंख सुनाऊँ! शब्द सुनाऊँ! तुलसी.....
चार वेद जिसके मुँह सोई वा हरि को रामा वा प्रभु को
क्या मैं गीता सुनाऊँ! तुलसी.....
तुलसी प्रभु जिनके सेवक हैं वा प्रभु को क्या मैं सेवा पाऊ!
दर्शन पाऊँ ध्यान लगाऊँ!! तुलसी.....
कौन यतन से मैं प्रभु को रिझाऊँ!!

(23)

प्रभाती

प्रातः समय प्रभु भजन करि हैं! प्रेम सहित हरि तुमको रिझाऊँ!
सालीगिराम जी सुनो मेरी विनती! यह वरदान कृपा करि पाऊँ!!
रतन सिंहासन आपों विराजें, शंखघंट कर ताल बजावै!!
अक्षत चंदन बेल की पाती, वरन वरन के मैं पुष्प चढ़ाऊँ!
यह वरदान कृपा करि पाऊँ!! सालीगिराम जी!
धूपदीप नैवेद्य आरती तुलसीदल और पानसुपारी!!
भोग लगाऊँ, नारियल भेंट चढ़ाऊँ!! सालीगिराम जी .....
पुष्पहार लगो मेरी सजनी, हंसत खेलत प्रभु बैंकुठ जाऊँ!!
जोइ जोइ नित भोग लगाऊँ, नित उठि प्रभुजी को दर्शन पाऊँ!!
हरि जी को दर्शन पाऊँ !! सालीगिराम .....
एक ही बूँद चरणामृत लीन्हो, पितरन सहित प्रभु बैकुंठ जाऊँ!
सौ योजन वैतरणी दीजै बैयां पकड़ि हरि पार उतारैं।
भवसागर से पार उतारें!! यह वरदान कृपा करि पाऊँ!!
जोइ-जोइ पाप किये दुनिया में, सोइ परिक्रमा करि संग बहाऊँ!
माधोदास प्रभुदास तुम्हारे, मैं अपने मन यूँ समझाऊँ!
सालीगिराम जी सुनो मेरी विनती, यह वरदान कृपा करि पाऊँ!!

(24)

प्रभाती

दर्शन दो भगवान दीना मगन भये!
गंगा यमुना जाय नहाऊँ, एक लोटा जलभरलाऊँ!
पूजा करों भगवान अब दीना मगन भये।
अक्षत चंदन बेल की पाती रामा, पुष्पन हार चढ़ाऊँ!
हर हर दूब चढ़ाऊँ, नारियल भेंट चढ़ाऊँ!!
भगवान अब दीना मगन भये!
धूपदीप नैवेद्य आरती लड्डुन भोग लगाऊँ!
जै जै कार मनाऊँ, प्रेम से भोग लगाऊँ!!
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, चरन कमल बलि जाऊँ!!

(25)

प्रभाती

समुंदर नहान गिरिजा आई!! समुंदर
सुवरन लोटा हाथ में गिरिजा लाई
नाई-धोइ के बैठी गौरा, समुंदर ने एक अरज सुनाई!!
कौन राजा की प्रेम लाड़िली, कवन राजा घर ब्याही!!
हिमान्चल राजा की प्रेम लाड़िली, शिवशंकर घर ब्याही!!
पार्वती मेरो नाम जो कहियो, लाज शरम पर्वत छोड़ि आई!!
पर्वत छोड़ि आई.....
सोने से तुम्हें पीलीं बना दूँ, रूपै से मड़वाइ दूँ!!
उस जोगी के क्या करोगी, बन जाओ नार हमारी!! समुन्दर
इतनी बात सुनी गिरिजा ने, नैनन नीर बहाये!!
प्राणनाथ हमारे, हो जाओ साथ हमारे !!
इतनो वचन सुनो शिवजी ने, शिवजी हो गये खारी!!
नाग फाँस की डोरी बाँधी, समुंदर कर दियो खाली!!
हाथ जोड़कर खड़ा समुंदर, ना जानू नार तुम्हारी!!
भोला ना जानों नार तुम्हारी.....
समुंदर न्हान गिरिजा आई.....

(26)
प्रभाती

फूलों से मथुरा छाई आज हर, फूलों से मथुरा छाई!!
कलियों से गोकुल छाई!! आज हर .....
की ये फूल सरग से उतरे, की मालिन चुन लाई!!
ऐसे-ऐसे फूल गिरे यमुना पर, राधा बीनन लाई!! आज हर
इन फूलन की बनी फूल माला, कृष्ण गले पहुँचाये! आज
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच में यमुना बहाये!!
चन्द्र सखी भजो बाल कृष्ण छवि हरि चरण चित लाई!! आज
फूलों से कलियों से गोकुल छाई आज हर!!

(27)
प्रभाती

मो को चाकर राखो सांवरिया गिरिधारी!! मोको .....
चाकर रहती बाग लगाती नित उठि दर्शन पाती .....
सुमिरण पावौं खरची!!
मोही न पूछे मदनमोहन से कहाँ मैं नहिं पायो।
तीन लोक जागीरी पाई निर्भय वटों निखायो!!
मो को चाकर राखो
रामभजन कूँ साधू आया, तप करने .....
जोगी आया जोग करन कूँ, तप करने संन्यासी
विद्रावन के बासी
ऊँचे ऊँचे महल बनाये, बिच बिच राखों क्यारी!
सांवलिया के आगे नाचूँ ओडि रहूँ बरसारी!!
मोर मुकुट पीताम्बर सौहै, गल वैजन्ती माला!
विन्द्रावन में धेनु चरावै, मोहन मुरली वाला!!
चौका बर्तन और झाड़ू, रोज लगाऊँगी!
सब संतन की सेवा पाऊँ, प्रभु के दर्शन पाऊँगी!!
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, चरण कमल लिपटाऊँगी!!
मोको चाकर राखो सांवरिया गिरिधारी .....

(28)

प्रभाती

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरा न कोई
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पती सोई!!
भाई छोड़या, बन्धु छोड्या छोड्या सगा सोई!
साधु संग बैठि बैठि, लोक लाज खोई!!
भगत देखि राजी हुई, जगत देखि रोई !! मेरे
दधि मथ घृत काढ़ लियो डारि दई छोई!
राणा विष को प्याला भेज्यो, पियो मगन होई।
मीरा पड़ी चरण कारण, होई है जो होई!
मेरे तो गिरिधर .....

(29)

श्रीराम भजन

सीताराम सीताराम सीताराम कहियो,
जाही विधि राखे राम ताही विधि रहियो।
मुँह में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में,
तू अकेला नाहीं प्यारे, राम तेरे साथ में।
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये,
जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये।
किया अभिमान तो मान नहिं पायेगा,
होगा प्यारे वही जो श्रीराम के मन भायेगा।
फल आशा त्याग सुन कर्म करते रहियो,
जाही विधि राखे राम ताही विधि रहियो।
जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के,
महलों में राखे चाहे झोपड़ी में वास दे।
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये,
जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये।

आशा एक राम जी से दूजी आशा छोड़ दे!
नाता एक राम जी से दूजा नाता तोड़ दे!
साधु संग राम रंग अंग अंग पगिये!
काम रस त्याग प्यारे राम रस पगिये!
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये!! जाही विधि

(30)
श्री राधा कृष्ण (जुगल जोड़ी) भजन

ओम् जय श्री राधा, जय श्री कृष्ण, श्री राधाकृष्णाय नमः

(1) चन्द्रमुखी चंचल चित चोरी!
सुघड़ साँवरा सूरत तोरी!!
श्यामा श्याम एक सी जोड़ी!! श्री राधाकृष्णाय नमः!

(2) पचरंग चूनर केसर क्यारी!
पट पीताम्बर कामर कारी!!
एक रूप अनुपम छवि न्यारी!! श्री राधाकृष्णाय नमः!

(3) चन्द्र चन्द्रिका चम चम चमके!
मोर मुकुट सिर दम दम दमके!
युगल प्रेम रख झम झम झम के!! श्री राधाकृष्णाय नमः!

(4) कस्तूरी कुमकुम-युत बिंदा!
चंचल चारु तिलक ब्रजचंदा!
सुघड़ लाड़िली लाल सुनन्दा! श्री राधाकृष्णाय नमः!

(5) धूम घुमारो घांघर सोहै!
कटि कछनी कमलापति सोहै!
कमलासन सुरनर मुनि मोहै!! श्री राधाकृष्णाय नमः!

(6) रत्नजड़ित आभूषण सुन्दर!
कौस्तुभमणि कमलांकित नटवर!
रुणत क्वणत मुरली धुन मनहर!! श्री राधाकृष्णाय नमः!

(7) श्रीराधा भव बाधा हारी!
संकट मोचन कृष्ण मुरारी!!
एक शक्ति एक ही आधारी!! श्री राधाकृष्णाय नमः!

(8) मन्द हसन मतवारे नैना!
मधु मुस्कावन मीठे बैना!
मनमोहन मतवारे सैना!! श्री राधाकृष्ण नमः!
(9) राधा राधा कृष्ण कन्हैया!!!
भव भय सागर पर लगैया
मंगलमूरति मोक्ष करैया श्री राधाकृष्णाय नमः!
(10) जगज्ज्योति जग जननी माता
जग जीवन जग पितु जग दाता!
जगदाधार जगत विख्याता!! श्री राधाकृष्णाय नमः!
(11) सर्वेश्वरी सर्व दुःखदाहन
त्रिभुवन पति त्रय ताप नसावन!
परम देवि परमेश्वर पावन! श्री राधाकृष्णाय नम!
(12) त्रिसमय युगल चरण चित लावैं!
सो नर जगत परम पद पावैं
राधा कृष्ण छयल मन भावैं!! श्री राधाकृष्णाय नमः!

(31)

श्रीकृष्ण भजन

राधा मंगल गावै, श्रीकृष्ण जी के संग!
रुक्मिणि मंगल गावै, भगवान जी के संग!
ब्रह्मलोक से ब्रह्मा आये, इन्द्र जी आये संग!
तैंतीस करोड़ देवता आये, काली नाग भुजंग!
कैलास से महादेव जी आये, भस्म रमाये अंग!
बिन्द्रावन का देख तमाशा, जटा बहाये गंग!! राधा..
थैया थैया कान्हा नांचे, और नाचे बहुरंग!
सोल सौ सहत्र गोपिका नाचे, आप नाचे गोविन्द!! राधा.
ताल तुरही ढ़प झाँझ बाजे, और बाजे मिरदंग!
कान्हा जी की बन्सी बाजै, राधा जी के संग!!
राधा मंगल, रुक्मिणि मंगल.....

(32)

श्रीकृष्ण भजन

फूल फूलन मैंने हरि को देखा!! मैंने प्रभु को देखा!
सब देखी मैंने फुलवारी हाँ, सब देखी मैंने फुलवारी!
कमल नयन कमलेश्वर देखे, उनकी अंखियां रतनारी!
गैंदे बीच गोबिन्द को देखा, मरुवे बीच मुकुट धारी!
श्रीकृष्ण बाड़ी में देखे, जिनके संग राधा प्यारी!
मनमोहन गोपियन में देखे, जिनकी महिमा अति भारी!
सेवती में सीतापति देखे, जिनको कहत धनुषधारी!
पात पात परमेश्वर देखे, जिनकी है यह फुलवारी!
सेवा सखी युगल छवि निरखें, चरण कमल की बलिहारी!!
फूल फूलन .....

(33) भजन प्रभाती

जय नारायण ब्रह्म परायण श्रीपति कमला कंतम्!,
नाम अनन्त कहाँ लगि बरणों, शेष न पावत अंतम् !! श्रीपति

शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक, नारद ध्यान धरंतम्!!
मच्छ कच्छ सूकर नरहरि प्रभु, बामन रूप धरंतम् !! श्रीपति

परसुराम सोई रामचन्द्र भये, लीला कोटि करंतम्!
जन्म लियो वसुदेव देवकी, यशुमति गोद खेलंतम्!! श्रीपति

पैठि पताल कालीनाग नाथे, फण पर करत निरंतम्!
हलधर होइ के असुर संहारे, कंस के केश गहंतम्!! श्रीपति

जगन्नाथ जगमग चिन्तामणि, बैठि रहे जिस चिंतम्
कलियुग हरण कलंकी होइ हैं, वेद पुराण भनंतम्!! श्रीपति

दसम स्कन्द भागवत लीला, सूर शरण भगवंतम् !! श्रीपति

(34) भजन प्रभाती

आवनरी मेरी संग सहेली, तुलसा बोवन जाइरी, तुलसा बोवन .....
काहे को गडुवा काहे की डोरी, कोहे की सीचूँ मैं क्यारी हो राम!
सत्य को गडुवा, धरम की डोरी, हरिजी की सीचूँ मैं क्यारी हो राम!!
क्यारि सीचि मैं घर को आई, सनमुख ठाड़े हरिजी हो राम!
कौन बाबुल की हो अलबेली, कौन पुरुष की नारी हो राम!! तुलसा
सत्य बाबुल की मैं अलबेली, पूर्ण पुरुष की नारी हो राम!!
किया किया तप तूने कियो रानी तुलसा कौन वरन वर पायो!
सावेन बहिनी मैंने साग न खायो, भादो दहिया न खायो हो राम!
क्वार बहिनी मैंने दूध न पियो, कार्तिक पह पह न्हायो हो राम!!
दोदल अब न खायो हो राम। राधा दामोदर पूजिये राम!! तुलसा
अगहन बहिनी मैने लाल न ओड़ो, पोष बहिनी मैंने लूण न खायो!
माघ बहिनी मैंने शीतल जल नहायो, बाली अंगेठी न तापी हो!! राम!
पंच अंगेठी न तापी हो राम, वेणी माधव पूजिये!! तुलसा बोवन
फागुन बहिनी मैंने होली न खेली, केसर रंग न डारो हो राम!
चैत बहिनी मैंने कलियां न तोड़ी, मालिन संग हार गुदायो हो राम!!
अपने हरि को पहनाये हो राम!! तुलसा बोवन .....
बैशाख बहिनी मैंने तप जल न्हायो, पंच अंगीठी तापी हो राम!
जेठ बहिनी मैंने बाली अंगेठी सोई अंगीठी तापी हो राम!
आषाढ़ बहिनी मैं पलंग न सोई, ना बिजना है डुलायो राम!
ऊनी सूरजि मैंने झूठ न बोलो, जानी सूरिज मैंने झाड़ू न झाड़ों
अपने पती की निन्दा न कीन्हीं बैठी सखिन के संग हो राम!!
तब गोविन्द वर पायो हो राम!! तुलसा बोवन जाइरी राम!!

(35)
भजन प्रभाती

बसनो श्री बिन्द्रावन को नीको, नीको नाम हरी को!
मध्यदेश एक मथुरा नगरी, निर्मल जल यमुना को!
चीरघाट अस्नान करन कूँ, दर्शन गोविन्द जी को!! बसनो श्री
हलधर गिरिधर मदनमनोहर ढोटा वसुदेव जी को!!
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, गोरोचन को टीको!! बसनो श्री
बिन्द्रावन में बाग लगाती, बिच बिच वन तुलसी को!
कुंजन-कुंजन फिरत राधिका, शब्द सुनत मुरली को!! बसनो श्री
अष्ट पहर कर जोर रहत है, गरुड़देव बिनती को!
सूरदास एहि ध्यान धरत हैं, श्याम राधिका जी को!! बसनो

(36)
भजन प्रभाती

भजनो श्रीराम नाम को नीको, तीन लोक और भुवन चतुर्दश
रचना ब्रह्मा जी को!!
वेद पुराण सकल यश गावैं, भक्ति बिना सब फीको!!
योग यज्ञ वैराग्य बिविध विधि, साधन मन इन्द्रिन को! भजनो
तीरथ ब्रत सकल करि आये, नाम बिना सब फीको!
देव दनुज मुनि मनुज सुरासुर, चाहत सुख मन ही को!! भजनो
बिविध भांति सब लाड़ लड़त हैं, प्रेम बिना सब फीको!
गोकुलदास सब धाम छोड़ि के, बसनो अवध पुरी को! भजनो

(37)
भजन प्रभाती

आज रहो शबरी के घर रामा!
आज रहो भिलनी घर रामा!

शबरी की कुटिया बनाओ पुण्य धामा! भिलनी की कुटिया
सरयू तट से जल भर लाई, आज करों रघुवर अस्नाना!
आज करो सियावर अस्नाना!

चुन-चुन कलियाँ हार गुदायो, अब गले पहिनाओ भगवाना!
चख-चख मीठे बेरों को लाऊँ, आज करो रघुवर जलपाना!
हरे-हरे पत्तों की सेज बनाई, आज करो रघुवर विश्रामा!!
शबरी के हिरदय में राम ही राम, चरणकमल लागि हूँ लिपटाना!
शबरी कहे मैं दासी तुम्हारी, भक्ति ज्ञान दीजो भगवाना!!
आज रहो भिलनी के घर रामा!!

(38)
दुर्गा माँ गीत

जय दुर्गे दुर्गति परिहारिणी!
शुंभ विदारिणी मात भवानी!
आदिशक्ति परब्रह्म स्वरूपिणी!
जग जननी चहुँ वेद बखानी!
ब्रह्मा, शिव, हरि अर्चन कीनो!
ध्यान धरत सुरनर मुनि ग्यानी।
अष्ट भुजा कर खड्ग विराजे
सिंह सवार सकल बरदानी!
ब्रह्मानंद शरण में तेरी!
भव भय पार करो महारानी!!

द्वितीय भाग- कर्म के गीत

(39)
शकुनाखर गीत

शकुना दे काज ए अती नीका, शकूना बोल ए
दाईण बाजनी शंख शबद, दैणी तीर, भरियो कलश अती नीका
सो रंगीलो पाटन अंचली कमल को फूल
सोई फूल मोलावान्त गणेश, रामीचन्द्र, लछीमन
लव-कुश, जीवा जनम आध्या अमरू होई!
सोई पाट पैरी रैन, सिद्धी-बुद्धि, सीता देही,
बहू राणी आईवान्ती पुत्रवान्ती होई!
सोई फूल मोला वान्त (घर के पुरुषों व बालकों के नाम)
जीवा जनम आध्या अमरू होई
सोई पाट पैरी रैन (घर की महिलाओं के नाम)
आईवान्ती पुत्रवान्ती होई।

(40)
श्रीगणेश जी का गीत

जय जय गणपती, जय जय हेरम्ब! सिद्धि विनायक!
एक दन्त, सूर्पकर्ण, गँवरि को नन्दन!
मूषक वाहन, सिन्दूरी समात!
अग्नी बिना होम नाहीं, ब्रह्मा बिना वेद नाहीं,
बिना तिल तर्पण नाहीं, बिना पुत्र गया नाहीं!!
कन्या बिना को कर कुल को उतार ए!!
आरंभ रचियन ले सर्व सिद्धि होई काज सिद्धि होई!
फूलनीं छ, फलनीं छ, जायसी वान्ती, ए!
फूल ब्यौंड़ी ल्यालो बालो, आपों रूपी अनरूपी माणिक!
मोत्यूं माणिक हीरा चौक पुरीयन ले!
सोवरण भरीयो कलश ए!!
तसु चौखा बैठाला रामीचन्द्र, लक्षमण पुत्र ए
ज्यौं लड़ी सीता देही, उरामिली, दुलाहिणी काज करैं!
राज रचनींछ, फूलनीं छ फलनीं छ जायसी वान्ती ए
फूल ब्यौंड़ी ल्यायो बालो, आपों रूपी माणिक
सोवरण भरियो कलश ए! तसु चौका बैठाला
(घर के पुरुष व बालकों के नाम) विप्र ए
ज्यों लड़ी (स्त्रियों के नाम सुन्दरी मंजरी)
काज करैलिन बहुवा राज रचियन ले!! जय जय गणपती

(41)

स्नान के समय हल्दी लगाने का गीत

उबटन दलियो मलियो मैल छुड़ाइये!
हल्दी के घर आज हल्दी मोलाइये!
तेली के घर जाइये तेल मोलाइये!!
हलदो रंगीलो हलद की सोभा!!
सरसों पींहलो पैराइये!
भाई बहिनी मिल आई, बालो नवाइये!
कुमकुम कस्तूरी परिमल अंग पैराइये!!
रामीचन्द्र हलदो मोलाय, लक्षमण हलदो मोलाय!
हलदी की सोभा (कुटुम्ब के पुरुष और बालकों के नाम)
मोलाय! सीतादेही उरामिली पैरावन योग्य तो हलदो घोटाई!
हलदो रंगीलो हलद की सोभा!
हलदो (स्त्रियों के नाम) पैराइये! हलदो रंगीलो.....

(42)

श्री गणपति जी का गीत

श्री गणपति नाइये, तेल पैराइये!
कुमकुम कस्तूरी परिमल अंग पैराइये!
तैसु गणपति पूजिये!!
गणपति पूजँ मैं रक्तचंदन ले, रोहिणीं पिठ्याउँ लै!!
शाली का अक्षत लै, पानसुपारी लै!!
बीड़ा बताशा लै, तैसु गणपति पूजिये!
गणपति पूजूँ मैं, खासा खजूरा ले!
लाडू सुवाली लै, दही दूध घृत लै!
धन और द्रव्य लै! तैसु गणपति ----

गणपति पूजूँ मैं दूब की डाली लै!
हलद की गाँठी लै, जाई का फूल लै लाल वस्त्र लै!
तैसो गणपति.....
अति सयानी अति मयानी कानन कुंडल धाई के
यथा शक्ति ले तथा भक्ति ले!
प्रथम मात्रा रेवती! तैसो गणपति पूजिये!!
काज करता विघन हर्ता सिद्धि दायक सोभितम्!
तैसो गणपति पूजूँ मैं!!

(43)
निमंत्रण गीत

प्रात जो न्यूतूँ मैं सूरिज, साँझ जो न्यूतूँ मैं चन्द्रमा!
किरणन को अधिकाय, ज्यूनिन को अधिकाय!
तारन को अधिकाय!!
समायो बधायो है न्यूतिए, आज बधायो है न्यूतिए!
गणपति न्यूतूँ मैं काज सूँ ब्रह्मा, विष्णु सृष्टि रचाए!
शंख-घंट शब्द सुनाइए! समायो बधायो न्यूतिए!
ब्राह्मण न्यूतूँ मैं काज सूँ, सोहागिली न्यूतूँ मैं काजसूं!
ब्राह्मण वेद पढ़ाय, सोहागिली मंगल गाय! समायो बधायो
बहिनियाँ न्यूतूँ मैं, कामिनी न्यूतूँ में, बांधव न्यूतूँ मैं काजसूँ!
मालिनी न्यूतूँ मैं, हलवाई न्यूतूँ मैं, तमोलिया न्यूतूँ मैं काजसूँ!
मालिनी फूल ले आय, हलवाई सीनी ले आय,
तमोलिया बीड़ा ले आय! ग्वालिनी दूध ले आय,
अहीरनी दइया ले आय! धिंवारिनी शकुन ले आय!
ज्यूरिया दूब ले आय! बढ़ैया चौक ले आय,
बजनिया बाजो ले आय! आंगनि धाई बजाय,
सब दिन होवैंगे काज! आज बधायो.....

(44)

मातृपूजन गीत

केरे लोक उपजन माई ए मात्रा
कौशल्या राणि कोखी उपजन,
सुमित्रा राणि कोखी उपजन!
रामीचन्द्र लछीमन पुत्र ए,
माथी लोक उपजन, माई जो मात्रा ए!
इनू घरी धौली हार काज!
काज सूँ राज रचियन ले!! (किसकी कोखी उपजन-ताई, माँ, चाची आदि के नाम उसके बाद पहिली पीढ़ी के पुरुषों के नाम)
माथी लोक उपजनी माई जो मात्रा (बहुवों और पुत्रों के नाम पीढ़ीवार लेने चाहिए)
चलो तुम्हीं मात्रा इनूँ घरी आज ए!
इनूँ घरी धौली हार, काज सूँ राज रचियन ले!!

(45)

वसोधारा गीत

वसो धारा वसो धारा धार उधारा
तस घृत रामीचन्द्र लछीमन माथ भराये
वसो धारा वसो धारा!
सीतादेही, उरामिली करत सिंगार
तस घृत ले (घर के पुरुष व बालकों के नाम)
माथ भराए तस घृत ले (घर की महिलाओं के नाम)
दुलहिणी करत सिंगार ए!!
वसो धारा वसो धारा!

(46)

पुण्यावाचन गीत

रामीचन्द्र, लछीमण दीना छन धरमीधर, ए हो धरमीधर!!
सीतादेही उरामिली दुलहिनी दीयो बड़ो दान बड़ा रे अमीयन ले!
ऐवान्ती मंगल देलिन, ब्राह्मण बेद पढ़ावत!
सोहागिली मंगल देलिन धरमिधर ए हो!

(घर के पुरुष तथा बालकों के नाम)

दीना छन धरमीधर ए हो (घर की महिलाओं के नाम)
दीयो बड़ो दान! तो बड़ो रे अमीयन लै सम्पती पुरियन लै!
ऐवान्ती मंगल देलिन, ब्राह्मण वेद पढ़ाला ले!
सर्वसिद्धि होई काज सिद्धि होई ए!

(47)

आबदेव गीत (पितृपूजन आशीष)

जाना जाना भँवरिला मांथी लोक न्यूंतो, पितरन न्यूंतो ए!!
नौं नीं जाड़न्यूं, गौं नी पछाणन्यू!
को रे होलो पितरन को द्वार ए!
आधा सरग चन्द्र सूरिज!
आधा सरग बादल रेख, वाँ रे होला पितरन को द्वार!
आवो आवो पितरो माथीलोक, तुमन सूँ न्यूतो छ!
स्वर्ग लोक बैठी पूछना छन दशरथ ज्यू, जनक राजा ज्यू
कै का घर न्यूतो छ आज, कलश घर बेद धुनि काज!
शंख धुनी काज एक!!
जोर तुमले पाल्या सैंत्या, दूध धोया!
कैरे बाटा कैरे घाटा पितरन द्वार! काँ रे होला पितर द्वार ए!

सूनूँ खुटकुणी रूप द्वार वारे होला पितर द्वार!
स्वर्ग बटी पुछनी छन कौसल्या राणी ज्यू!
सुमित्रा राणी ज्यू, को यो बहुवन ले,
बढ़ायो छ गोत्र, देवायो छ न्यूतो!
सीता देही उरामिली बहुवन ले बढ़ायो छ गोत्र!
स्वर्ग बटी पूछना छन (छोटे से बड़े पितरों के नाम)
को ए ऊ पुत्रन ले दिवायो छ न्यूंतो!
जो रे तूमले पाल्या सैंत्या, धृत मल्या, दूध धोया!
(वर के पुरुषों के नाम)
ऊरै पुत्रन ले देवायो छ न्यूंतो!
स्वर्ग बटी पूछना छन को ए ऊ! (घर की स्त्रियों के नाम)
बहुवन ले बड़ायो छ गोत्र ए!
जोरे तुमि ले व्याहि छिन, बड़ा कुल की, बड़ा वंश की
आणी छन, ऊ रै बहुवन ले बढ़ायो छ गोत्र!
धरती हुणी डीठ नी पड़नी, याईं बठी द्यूँला अशीष!
जी रया पुत्रो, जी रया नातियो लाख वरीष ए!
सोह्मगिलि तुमरी सबै जनम ऐवान्ती!
जनम पुत्रवान्ती ए!!

(48)
कलश थापन गीत

(1) धरती धरम ले कलश थापी ले।
चौमुख ब्रह्मा ले, तांबा का पात्र ले।
गंगा जमुना का नीर ले, कलश थापी ले।
आज भरियो कलश! आज बधावन, नगरी सोहावन!
पंच पल्लव लै, पंच रतन लै,
सुपारी का छाना ले, हल्दी की गांठी ले,
शाली अक्षतन लै, खेत का जौऊन लै, कलश थापी लै।
आज भरियो कलश, दही-दूध घृत ले,
पिंहला सरसों लै, जाई का फूल लै! कलश थापि लै।
आज भरियो कलश, आज बधावन!
नगरी सुहावन कलश, देश दिखावन!!

(2) जहां धरियो है भरियां कलश, तहां रतन पदारथ उपजिए!
तहां गणपति सिद्धि ले आए!
तहां ब्रह्मा विष्णु सृष्टि रचाय!
तहां शंख घंट, शबद सुनाइए!
जहां धरियो है भरियो कलश, तहां जोतिसी लगन लै आइ ए!
तहां ब्राह्मण वेद पढ़ाइए!
तहां सोहागिनी मंगल गाइए!
तहां कामिनी दीयो जलाइए!
तहां बहिनिया रोचन गाइए!
तहां बांधव सोभा बढ़ाय!
तहां मालिनी फूल ले आय!

तहाँ अहिरिनी दहिया ले आय!
तहाँ बजनिया बाजो बजाय!
तहाँ तमोलिया बीड़ा लै आय!
तहाँ बढैया चौंक ले आय!
तहाँ आँगनि धाई बजाई!
तहाँ दिन दिन होवेंगे काज ए!!

(3) तुम रामीचन्द्र लछीमन, कवन के पूत!
तुम कवन मैया ले उर धरो। उर धरो है लला दस मास!
तुम कवन सोहागिली के बालम!
तुम कवन बहिनियाँ के वीरन!
हम राजा दशरथ के पूत, मेरी मैया कोशल्या राणी लै,
सुमित्रा राणी लै, उर धरो। उर धरो है लला दस मास!
मेरी बहुवा सीतादेही के, उरामिली के बालम!
हम बहिनी शांता देही के, अनपूर्णा देही के वीरन ए
तुम (पहली पीढ़ी के पुरुषों के नाम) कवन के पूत!
कवन मैया ले उर धरो, उर धरो है लला दस मास!
तुम कवन बहिनी के वीरन!
हम पण्डित (ताऊ, पिता, चाचा के नाम)
मेरी माई (परिवार की स्त्रियों के नाम-सुन्दरी/मंजरी)
लै उर धरो, उर धरो है लला दस मास!
(बहिनों के नाम) के वीरन
(बहुवों के पुत्रों और पौत्रों के नाम)

(49)

नवग्रह गीत

गावन्त जै मंगल बोलन्त शुभ मंगल ईनूँ घरी आज ए!
मूश वाहन चढ़ि गणपति चली आया!
हंसवाहन चढ़ि ब्रह्मा जी चली आया!
गरुड़ वाहन चढ़ि विष्णु जी चली आया!
वृषभ वाहन चढ़ि शंकर जी चली आया!
सिंह वाहन चढ़ि देवी जी चलि एन!
ईनू सुन मंगल ईनूं घरी आज ए!
हस्ती वाहन चढ़ि इन्द्र राजा चलि आया!
रथवाहन चढ़ि सूरिज जी चलि आया!
चन्द्रमा जी चली आया!
यो रे देवा मंडप नवग्रह चलि आया!
यो रे देवा पूजियन लै सर्वसिद्धि होई!
काज सिद्धि होई, इन शुभ मंगल, इन घरी आज ए!!

(50)
जीवमातृ की आरती/सेली गीत

माई सोने को गड़ुवा ले हो, माई रूपै की थाली ले हो!
माई तापर करिए आरती, माई लाल लहंगा लेहो!
कुसुंब अंगिया ले हो, माई पीली चूनर लेहो!
तापर करिए आरती!!
अंगना में चन्दन लिपाइए!
गज मोती चौंक पुराइए!
तस चौंका बैठाला रामीचन्द्र, लछीमन सबै भाई, भाई बन्द
ए कर हो शांता देही, अन्नपूर्ण देही आरती!
आरती डारूं मैं रीक रूपया मुहर असरफी!
हंसि हंसि देला अशीष ए
तस चौंका बैठाला पंडित (पुरुषों और बालकों के नाम)
कर हो बुवा अब, कर हो बहिनी अब आरती!
हंसि हंसि देला अशीष!
ताई के, मैया के, चाची के, भाभी के लाला!
जिन्हें पैराई है चूनर, ईन! घरि बाजत बधाई!
जुग जुग जीये सब लोग ए!

(51)

कलश उठाने का गीत

चार ही कलश ए, आठ ही ब्राह्मण ए!
गंगा जमुना को नीर, कुम्भन कलश भराय!
कलश को नीर ए!!
सींचनी विश्वामित्र, सींचनी बशिष्ठ ए!
सींचनी पुरोहित ए!
छोड़नी रामीचन्द्र लछीमन ए!
सींचनी (पुरोहित का नाम)
पढ़ी गुणी ब्राह्मण देला अशीष ए!
तुमरी सोहागिली जनम ऐवान्ती, जनम पुत्रवान्ती!
जी रया जजमान लाख वरीष। छोड़नी!
पण्डित (परिवार के पुरुषों के नाम) विप्र ए
सोहागिली जनम ऐवान्ती जनम पुत्रवान्ती!!

(52)

संध्या दीपक गीत

सांझ पड़ी सांझवाली पाया चली ऐंन!
आसपास गज मोत्यूंहार!
लक्ष्मी पुछन छिन स्वामी अपना नारायण!
किन घर आनन्द बधाई, शुभ घड़ी आनन्द बधाई!
रामीचन्द्र घर, लछीमन घर दीयो मोला छ!
सीतादेही उरामिली, जनम ऐवान्ती पुत्रवान्ती!
अगर चन्दन को दियड़ा इनु घड़ी रात्रि सुलक्षिणी रात्रि ए!!
(परिवार के पुरुष व बालकों के नाम) धर सांझ को दियो जगायो!
सोहागिली(सुन्दरी/मंजरी) जनम ऐवान्तीजनम पुत्रवान्ती ए!
जाग हो, जाग हो, दियड़ा ईनूं घरी सांझ!!

(53)

संध्या गीत

गढ़ रे, कत्यूरी गढ़ दीयो गढ़ायो!
किन ए ऊ पंडित ले दीयो मोलायो!
किन ए ऊ सोहागिली ले दीयो जगायो!
रामीचन्द्र ले लछीमन ले दीयो मोलायो!
सोहागिली सीता देही ले, उरामिली ले दीयो जगायो!!
कित सहस्र कित मण को दीयो मोलायो!
दीप सूँणी सांचो मैंले, तील को तेल!
गाई को घृत कर्पूर सारी बाती ए!
जाग हो जाग हो दियड़ा ईनूं घरी रात्रि ए!
(घर के पुरुषों व बालकों के नाम) दियो मोलायो!!
सोहागिली (सुन्दरी/मंजरी ले) दीयो जगायो!
जाग हो जाग हो दियड़ा ईनू घरी रात्रि ए!
सुलक्षणी रात्रि ए!!

(54)

काज खिलने का गीत

कारज खिलि रहे आज ईनूं घरी!
दीपक जलि रहे आज ईनूं घरी!
माणिक उगि रहे आज ईनूं घरी!
पतंग उड़ि रहे आज ईनूं घरी!
सूरिज उगि रहे आज ईनूं घरी!
सहनाई बज रही आज ईनूं घरी!
रामीचन्द्र के घर जाग दियड़ा!
लछीमन के घर जाग दियड़ा!
सीता देही पेलत तेल ईनू घरी!
उरामिली पेलत तेल ईनू घरी!

पण्डित (कुटुम्ब के नाम) के घर जाग दियड़ा
(सुन्दरी/ मंजरी) सोहागिली पेलत तेल ईनूं घरी!
कारज खिलि रहे आज ईनूं !!

(55)
बधावा

रामीचन्द्र दरेबार, लछीमन दरेबार
बधायो रातो ए, सुहायो रातो ए
तुम तो उठवानी बहुवा
सीता देही, उरामिली, दुलाहिणी!
ओड़ो दक्षिण को चीर!
हम तो ओड़ि रहे, हम तो पैरि रहे,
अपने बाबुल परसाद, ससुर दरबार,
सैंया को राज, लला को काज,
हम तो पैरि रहे, हम तो ओड़ि रहे,
बधायो रातो ए।
पण्डित दरबार (कुटुम्ब के नाम) भाई बन्द दरेबार!
(सुन्दरी/मंजरी) ओड़ो दक्षिण को चीर,
हम तो ओड़ि रहे, पैरि रहे,
अपने बाबुल परसाद, ससूर दरेबार,
सैंयां के राज, लला के काज ए,
बधायो रातो ए सुहायो रातो ए।

(56)

कृष्ण जन्म गीत

आज नंद घर भई है भीड़, आज नंद घर भई है भीड़!
एक ही आवत, एक ही जावत, एक खड़ी दरवाजे के तीर!!
आज नंद .....
हर हर गोबर मन्दिर लिपाऊँ, गज मोती चौक पुराऊँ!
मात यशोदा पलंग पर बैठी, गोदी में कुंवर कन्हैया बलवीर!!
आज नंद .....
दस लाख सखियाँ बुलावन आई, बीस लाख बिगर बुलैया के तीर!!
सब सखियाँ मिल देत अशीषा, चिरंजीवी रहे बलवीर, गोपाल रघुवीर!!
आज नंद .....
सबको मान बराबर दीनों, हाथ जोड़ि अति दीन!!
आज नंद घर भई हैं भीड़!!

(57)

षष्ठी पूजा गीत

कौन महल में बाजो री बाजो,
कौन महल में मनाला ललना!
रंग महल में बाजोरी बाजो!
नन्द महल में मनाला ललना!
किनरुपी बाजो मनाला भाई!
किन रुपी जायो ललना!
रामीचन्द्र घर लछीमण घर बाजो री बजाला!
(पुरुष व बालकों के नाम) घर बाजो री बजाला!
(सुन्दरी/ मंजरी) जायोरी ललना!
किन रूपी बाजो मनाला माई
किन रूपी जायो ललना!
घन रूपी बाजो मनाला माई
बहुरूपी जायो ललना, माई बहुरूपी जायो ललना!

(58)
बधाई गीत

मदन मनोहर मानिये शहिजादे बरना!
कब तुम जनमोगी पूत, श्याम शहिजादे बरना!
भादों की अधियारी, श्याम शहिजादे बरना!
कार्तिक की उजियारी श्याम शहिजादे बरना!
पैल दिनन के लला भये श्याम शहिजादे बरना!
भयो है यो जाती कर्म, श्याम शहिजादे बरना!
तीन दिनन के लला भये, श्याम शहिजादे बरना!
मायोली पुड़िया सेजाय श्याम शहिजादे बरना!
पांच दिनन के लला भये, श्याम शहिजादे बरना!
मायोली करो है पचैल, श्याम शहिजादे बरना!
छय दिनन के लला भये, श्याम शहिजादे बरना!
पुरवायो षष्टी को चौक, श्याम शहिजादे बरना!
ब्राहमण पूजा कराय,बाबुल खरचेंगे दाम श्याम शहिजादे बरना!
इग्यार दिनन के लला भये श्याम शहिजादे बरना!
भयो है यो सूरिज जुहार! बाबुल नाम धराय!
पंडित लगन ले आय, श्याम शहिजादे बरना!
छय मास के जब लला भये श्याम शहिजादे बरना!
भयो है जो अन्न प्रासन! मायली खीर चखाय,
श्याम शहिजाद बरना
एक वरष के जब भये सहिजादे बरना!
जनम उत्सव जो मनाय सोहागिली मंगल गाय!
तीन बरष के जब भये, श्याम शहिजादे बरना!
भयो है चूड़ाकर्म श्याम शहिजादे बरना!
पांच बरस के लला भये श्याम शहिजादे बरना!
करायो है अक्षर ज्ञान श्याम शहिजादे बरना!
बाबुल पटिया ले आय श्याम शहिजादे बरना!

इग्यार बरष के लला भये, श्याम शहिजादे बरना!
रचायो जनेऊ को काज, बाबुल शाला बनाय!
ब्राह्मण वेद पढ़ाय, पण्डित यज्ञ कराय शहिजादे बरना!
सोहागिली मंगल गाय, आंगनी धाई बजाय!
सोल बरष के लला भये, श्याम शहिजादे बरना!
कवन पण्डित को लाड़िली, कवन सजन की धीया!
सजन जनक की धीया, श्याम शहिजादे बरना!
अब कर मायड़ी आनंद श्याम शहिजादे बरना!
वीरन बहू घर लाइये (परिवार के सभी पुरुष व महिलाओं के नाम)

(59)
जनेऊ का गीत

कैले तेरी बाला बटू लटिया न्यौते छ!
बटू लटिया न्योतै छ!
अंचली छोड़ै छ एहो, अंचली!
बबज्यू तेरा रामीचन्द्र लैं,
ककज्यू तेरा लद्दीमण ले ?
माई तेरी सीता देही लै, उरामिली लै,
अंचली छोड़ै छ बटू, अंचली छोड़ै छ!
बहिनी तेरी शांता देही ले, अन्नपूर्णा देही ले!
थाल छोड़ै छ बटू.....!
बबज्यू तेरा (पिता, ताऊ, चाचा का नाम)
ले लटिया न्योतै छ!
माई तेरी (सुन्दरी) ले अंचली छोड़ै छ!
बहिना तेरी (बहिनों के नाम) थाल छोड़ै छ!!

(60)

होम के समय का गीत

घिय की गगरी भराओ रे बटुवा!
पानन मंडप छबाओ!
लौगन बाड़ बढ़ाओ रे बटुवा!
किसके हो तुम नाती, किसके पणनाती!
दसरथ के हम नाती पणनाती!
रामीचन्द्र के हम पुत्र!
बशिष्ट बेदी बधावो!
विश्वामित्र बेदी बधावो!
रामीचन्द्र लछीमन आहुती देत!
लव-कुश आहुती देत बटुवा! (घर के पुरुषों का नाम)
बाला बटू आहुती देत सोहागिली मंगल गाइए,
तो सोभा बढ़ाइए!!

(61)

यज्ञशाला में दीपक जलाने का गीत

ए जग दीयड़ा जाग हो,जाग हो दीयड़ा!
रामीचन्द्र लछीमन विप्र ए! लवकुश ये यज्ञशाला!
अहो जग दीयड़ा धन्य धन्य ओबरी!
सीतादेही उरामिली की कोख ए, जाग हो दीयड़ा!!
चार ही तखत उजालो, सर्व सोने की रात ए!
जाग हो जाग हो दीयड़ा (पुरुषों व बालकों के नाम)
ये यज्ञशाला, अहो जग दीयड़ा, धन्य धन्य ओबरी!
(सुन्दरी/मंजरी) सोहागिली कोख!
जाग हो जाग हो दियड़ा ये यज्ञशाला ए!
मायेली सर्व श्रंगार, सवै बहुवा सर्व श्रंगार!
चार ही तखत उजालो!!

(62)
जनेऊ गीत

केले तेरो बाला बटू जनेऊ बणै छ!
केले तेरो बाला बटू जनेऊ रंगै छ!
बाबू मेरा रामीचन्द्र ले!
ककज्यू मेरा लछीमन ले! जनेऊ बणै छ!
मैया मेरी सीता देही ले चाची मेरी उरामिली ले!
दुलाहिणी ले, सोहागिली ले, जनेऊ रंगै छ!

ताऊ मेरा, ककज्यू मेरा, बबज्यू मेरा, जनेऊ बणैछ!
ब्राहमण पण्डित लै जनेऊ पैराछ! बटू जनेऊ पैं राछ!
तेपुरी छेंपुरी जनेऊ बणै छ!
पंडित पुरोहित ले जनेऊ पैरा छ!
जीयो तुम बाला बटू
संध्या सुणनूँ, बटू संध्या सुणनूँ!

ताऊ तेरा, बबज्यू तेरा, ककज्यू तेरा, संध्या सुणनूँ!
ताई तेरी, मैया तेरी, चाची तेरी देलिन अशीष ए!
एक एणी बटू मेरो युग युग जीव चिरंजीवी रईये
काशी बटे पढ़ी लेखी पंडित!
पढ़ी बेर बाला बटू; पढ़ी बेर, ब्याह रचूंला ए! राज रचूंला!!

(63)
बधावा गीत

बधावा आंगना बाजे, सुहावा आंगना बाजे!
बहू घर आवत तब बाजे, बेटा होवत तब बाजे! बधावा
सीतादेही जायो लाल, रामीचन्द्र को मन रे हंसे!
उरामिली जायोलाल, लछीमन मन रे हंसे!
दुलाहिणी जायो लाल, लवकुश को मन रे हँसे!
बेटा होवत तब बाजे, जनेऊ होवत तब बाजे!!
बहू घर आवत तब बाजै
(सुन्दरियों के नाम ठीक ऊपर की तरह) जाओ लाल
(घर के पुरुषों के नाम) को मन रे हँसे!
पंडित को मन रे हँसे!
बधावा आंगना बाजे, सुहावा आंगना बाजे!!

(64)
स्वांलपथाई गीत

कोइ ऊ कड़की मोला छ यो धन्य सिद्धि!
अहो धन सिद्धि को ए ऊ, स्वालि बणै छ!
नगर खण्ड स्यृति ए!
रामीचन्द्र लछीमन लवकुश कड़की मोला छ!
अहो धन सिद्धि यो धन सिद्धि!
सीतादेही उरामिली दुलाहिणी, स्वालि बणै छ!
नगरखण्ड स्यृति ए [illegible]
स्वालि बड़ै छ! नगरखंड स्यृति ए!

(65)

लाड़ू बाटने का गीत

लाड़ू जो बाटूं में टुण टुणी, काज परोसन आपने!
सीतादेही न्यूंतूँ मैं, उरामिली न्यूतूँ मैं
दादी न्यूंतूं मैं, ताई न्यूतूँ मैं, मैया न्यूतँ मैं
चाची न्यूतूँ मैं, भाभी न्यूतूँ मैं!
सबै बहुवा न्यूतूँ मैं काज परोसन लाड़ू बाटन!

(66)

रंगाली का गीत

फागुन तेरे मौसम में रंग लाल घोड़ी आई!
रंगीली घोड़ी आई, छबीली घोड़ी आई!
शीष बने के मुकटों सोहै, कान बने के कुंडल सौहे!
तेरे सेहरे से रंग लाई, तेरे पेची से रंग लाई!
तेरे बाली से रंग लाई, तेरे पाऊडर से रंग लाई!
छबीली घोड़ी आई, सुघड़ घोड़ी आई,
रंगीली घोड़ी से रंग लाई!
तेरे कारों से रंग लाई, छबीली घोड़ी आई,
रंगीली घोड़ी आई! रंग लाल घोड़ी आई!

(67)

रंगाली का गीत

आज मेरे अंगना में रंग बरसत है!
रंग बरसत है! अबीर उड़त है, गुलाल उड़त है!
सिर तेरे ककड़े, जिव चीरा, कान तेरे उजले सब मोती!
मुकटों के ऊपर तेरे, सिंहरा के ऊपर तेरे भँवर लुभत है!
आज मेरे अगना में रंग बरसत है!
नैन तेरे लाहुरिया सुरमा, मुँह तेरे मगही का बीड़ा!
सूरत के ऊपर तेरे, पावडर के ऊपर तेरे,
लाली के ऊपर तेरे, भँवर लुभत है, आज मेरे.....
अंग तेरे जरकस जामें पटका
शालों के ऊपर तेरे, कारों के ऊपर तेरे
घोड़ी के ऊपर तेरे, भँवर लुभत है, आज मेरे.....
बना हाथ तेरे घड़िया सोहे, अंगूठी के ऊपर तेरे
कांगनों के ऊपर तेरे भँवर लुभत है
संग तेरे भाइन का जोड़ा
बन्नी के ऊपर तेरे, मैंफिल के ऊपर तेरे
भंवर लुभत है, आज मेरे.....

(68)

ताई लगाने का गीत

को ए ऊ ताई मोलाइए, को ए ऊ चूलि हलाय ए!
रामीचन्द्र ताई मोलाय, लछीमन ताई मोलाय ए!
को ए ऊ सोहागिली चूली हलाइए!
सीतादेही बहू राणी चूलि हलाइए!
चूलि जो माँग छे श्रीखंड दार!
ताई जो मांग छे, गुड़ घिय पाग!
करनी छन पुत्रन को काज ए
अबीयन ले चूलिहला छ, ताई मोलाइए
(पुरुषों व बालकों के नाम) ताई मोलै छ!
(घर की सुन्दरी/मंजरी) चूजि हलै छ!
को ए ऊ ताई मोलाय ए!!

(69)

सेहरा गीत

सिंहरा गुंदाय लाए हो मालनियाँ, सिंहरा गुंदाय लाये!
आओ आओ मालिन बैठो मेरे अंगना!
कर सिहरे का मोल री मालनियाँ!
एक लख सिहरे का मोल हुवा है
दस लख दादा देंगे री मालनियाँ!
दस लख ताऊ देंगे री मालनियाँ!
दस लख चाचा देंगे री मालनियाँ!
सिहरा गुदाय लाए री मालनियाँ!

एक लख सिहरे का मोल हुवा है!
दस लख मैया देंगे री मालनियाँ!
दस लख मामा देंगे री मालनियाँ!
मौंसा जीजा फूफा देंगे री मालनियाँ!
बेला चमेली का फूल गुंथाया
बिच बिच लागे गुलाब री मालनियाँ!
कर सिहरे का मोल री मालनियाँ!

(70)

ससुराल को जाते समय का गीत

ससुराल को जइयो मेरे लाल बन्ना!
दादा की फुलवारियाँ, ताऊ की फुलवारियाँ!
चाचा की फुलवारियाँ! चाचा की फुलवारियाँ!
जरा फूल बिन लइयो मेरे लाल बन्ना!
मैया की फूलवारियाँ! नाना की फुलवारियाँ!
मामा की फुलवारियाँ! मौंसा की फुलवारियाँ!
फूफा की फुलवारियाँ, जीजा की फुलवारियाँ!
जरा फूल बिन लइयो मेरे लाल बन्ना!
ससुराल को जइयो मेरे लाल बन्ना!
अच्छे अच्छे रंग से पगिया रंगवाइयो!
सास जो पूछे कुछ हंस के मुसकाइयो!
साली जो मांगे पैसा कम खरचइयो!
जूता छिपावे तो संभल के पाँव रखियो!
होले होले धीरे-धीरे, ससुराल को जइयो !

(71)

दूध का मोल गीत

दूध का कर मोल बनड़े, दूध का कर मोल बनड़े!
गाई का दूध तो मोल बिकत है!
माई का दूध अनमोल बनड़े!!
दूध का कर मोल बनड़े!
गाई का दूध तो मोल बिकत हैं!!
ताई दूध अनमोल बनड़े!
चाची का दूध अनमोल बनड़े!
दूध का कर मोल बनड़े!2!

(72)

धूलि अर्घ का गीत

चल तुम्हीं रामीचन्द्र, चल तुम्हीं लछीमन!
शाला दोशाला ओड़ी, धोती ऊपर्ण पैरी!
जरकसी पाग पैरी, पिहली जनेऊ पैरी!
शीष मुकुट पैरी, पेची सेहरा पैरी!
कानन कुंडल पैरी!!
आंगिनि पंटागनि देवकीपूत नारायण ठाड़ो!
ऐसो रूपी देखो मैंले नैनन काजल डारी!
केसर लिलाट धरी, रतन जड़ाऊ हार!
मूँग मोती बाजूबन्द, हीरा अंगूठी पैरी!
ऐसो रूपी देखो, मैं ले ब्रह्म रूपी देखो मैंले, आंगनि पंटागनि!

(73)

धूलि अर्घगीत (सिटौल)

छाजा में बैठी समधिणि पूछे को होलो दुलहा को बाबा ए!
को होलो दुलहा को दादा, ताऊ, चाचा ए!
हस्ती चढ़े समधी दाम बिखेरे ए!
कालो छ जूतो, पीली छ टांकी, वी होलो दुलहा को बाबा ए!
हाथ में जाकी लम्बी छ दाड़ी, वी होलो दुलहा को ताऊ ए!
लाल दोशाला हाथ में बटुवा, वी होलो दुलहा को ताऊ ए!
सूट छ टाई, हाथ में कैमरा, वी होलो दुलहा को वीरन ए!
और जो होला नाना, मामा, मौसा, जीजा!
और बराती छुट-छुट साथी, आंगन ठाड़े!
हरे हरे बाँस कटौ मेरे बाबुल ऊँची छवौ चौपाल ए!
कित लख आए हस्ती रे घोड़ा, कित लख आई बारात ए!
एक लख आए हस्ती रे घोड़ा, दस लख आई बरात ए!
ये दल देखि डरै मेरे बाबुल, भाई बन्धु दल थामिए!

(74)

कन्यादान में बैठने का गीत

(1) चन्दन चौंकी बैठि लड़ैती, केस दिए छिटकाई ए!
लाड़ी के बाबा यूं उठि बोले, अब बेटी केश सवारिए!
आई है लगन की बेर ए!
हाथ गड़ुवा ले के मायलि ठाड़ी, कहाँ अब कुश की डाली!
कहाँ धरी परात ए!
तुम नहीं कम्पो बबज्यू हमारे (कुटुम्ब के नाम—दादा, ताऊ, चाचा आदि) आई है लगन की बेर ए!
हम नहीं कम्पै बेटी हमारी, कम्पै कुशा की डाली, फूल की डाली!
हाथ गड़ुवा ले (ताई, माई, चाची) ठाड़ी! कहाँ धरी परात ए!

(75)

कन्यादान में बैठने का गीत

बाबुल खोलो परद वर देखिए, वर देखिए!
ताऊ खोलो परद वर देखिए,
चाचा खोलो परद, वर देखिए!
हाथ पकड़ि के परद उठावैं!
बेटी वर तेरो कृष्ण मुरारी!
बाबुल हम गोरी वर साँवरों।
बेटी वर आयो माघ तुस्यारी में!
बेटी वर आयो जेठ की धूप में!
बेटी वा गुण वर तेरो साँवरो।
बेटी तेरो वर कृष्ण मुरारी!
चाची परद उठावैं, भाभी परद उठावैं!
बेटी वर तेरो कृष्ण मुरारी !
करो सैयाँ को राज, सोल श्रृंगार!
जनम-जनम सौभाग्यवती, जनम जनम रहो पुत्रवती!

(76)

जुहरा गीत

कोएऊ जुहरा जीती लाए, कोएऊ गए हारि!
दशरथ जुहरा जीती लाये, रामीचन्द्र जुहरा जीती लाए!
लछीमन जुहरा जीती लाये, जनक राजा जुहरा हारि गये!
(इसी तरह वर के परिवार के पुरुषों का नाम) जीती लायें!
(फिर लड़की के परिवार के पुरुषों के नाम) हारि गये!!

(77)

कन्या की विदाई का गीत

नदिया के ढिग-ढिग निकसी लड़ैती!
नवल भये असवार ए।
छोटे वीरन मेरे पकड़ी अंगुलिया!
हमरी बहिन कहाँ जाइए।
छोड़ो-छोड़ो वीरन हमारी अंगुलिया!
हम परदेशिन लोग ए!
जैसे जंगल की चिड़िया बोले!
रात बसे दिन उड़ि चले।
तैसे बाबुल घर हम धीया जनमी!
रात बसें दिन उड़ि चलें!
बाबुल रोयें नदिया बहत है!
मैया रोवे सागर ताल ए!
वीरन रोवैं पलट-पलट कर!
भाभी को भींगे रूमाल ए!
मैया कहे बेटी नित उठि अइए!
बाबुल कहे हर मास ए।
भाई कहै बहिना काज सों अइए!
भाभी कहै क्या काम ए!

(78)
बारात घर पहुँचने पर गीत

को बेटी ल्याई है रोचना, को ए ऊ चँवर डुलराय!
को ए ऊ तिलक लगाय, को ए ऊ पानी परख!
को ए ऊ मंगल गाय!
सुभद्रा देही, अन्नपूर्ण देही लाई है रोचना!
रामीचन्द्र तिलक लगाय! लछीमन चवर डुराय,
सोहागिलि मंगल गाय!
अयोध्या नगरी बधावन, नगरी सोहावन, देश दिखावन!
आए अयोध्या नगरी, अब कर मायली आनन्द!
वीरन बहू घर लाइ के, अब कर दादी, अब कर ताई!
अब कर मैया, अब कर चाची आरती!
बेटा बहू घर लायो!!

(79)
बधावा गीत आशीष का

युग युग जीवै तेरा बन्ना, ये बन्नी अटल सोहागन!
बन्ने के दादा लाख बरष जीवै, दादी सर्व सोहागन!
बन्ने के ताऊ लाख बरष जीवे, ताई सर्व सोहागन!
बन्ने के बाबा लाख बरष जीवे मैया सर्व सोहागन!
बन्ने के चाचा लाख बरष जीवे चाची सर्व सोहागन!
बन्ने के भैया लाख बरष जीवे भाभी सर्व सोहागन!

(80)
नौल पूजन गीत

स्यो पूजा स्यो पूजा माई सेवा!
जनम जनम ए वान्ती सेवा!
जनम जनम पुत्र वान्ती सेवा!
हरिया गोबर लीपि सेवा!
पिहला एपुण थापि सेवा!
(सुन्दरी/ मंजरी) जनम एवान्ती
एक जो मागूँ सैंया को राज!
दूजो मांगूँ लला को काज!
पिहला एपुण थापि सेवा!
जनम जनम पुत्रवान्ती सेवा!

(81)
जलपूजन गीत

ए जल पूजन, अहो जल पूजन जाय!
तुमरे रामीचन्द्र, तुमरे लक्ष्मण!
कुल पूजी ए पंचताई! अहो पंचताई मोलाई!
तुमरी सीतादेही, तुमरी उरामिली, दुलाहिणी ए पंचताई मोलाई!
लाल जड़ित की पहुचियाँ! रतन जड़ित की पहुचियाँ,
ए जल पूजन जाय। अहो जल पूजन जाय!
तुमरे (परिवार के पुरुषों के नाम)कुल पूजो,
ए पंचताईन लै तुमरी (सुन्दरी/मंजरी) कुलवधून लै ए,
पंचताई मोलाय, लाल जड़ित की पहुचियाँ,
ए पूजन जाऊँ रतन जड़ित की पहुचियाँ!

(82)
सौहर गीत/रामजन्म

दोहद ठाड़ी कौशल्या सिंहासन राजा दशरथ ए
अरे हाँ राजा अरथ धरम जाको नाहीं अपनी संतति बिना
बोली रे भोली कौशल्या राणी, किसने बहकाई, कौन निमोही!
अरे हाँ रे रानी जब रे विधाता देवे संतति तब होइ ए।
बोलो शहर के पंडित बड़े बड़े ज्योतिष
ए पोथी ले के कागज लेके, अइयो न ए,
अरे हाँ रे, ज्योतिष, ये दोनों कर्म के अक्षर बाँचि सुनाइए
कागज हो रानी बाचूँ और बाँचि सुनाऊँ न ए
अरे हाँ रे रानी, यह दोनों कर्म के अक्षर बाँचि न जाइए
बोलो शहर के लोगो वेगि चलि अइयो, सीता वै चली अइयो:
अरे हाँ रे मालिया कहावन है एक बुटिया तो औषधि जन्म के
कहा मुख धरो है सिलौटा कहा मुख बटिया न ए
अरे हाँ रे रानी विन्द्रावन पाई एक बुटिया तो औषधि जन्म की
कहामुख धरो है सिलौटा कहामुख बटियान ए!
अरे हाँ रे रानी औषध घुटने को पूर्वमुख बैठी कौशल्या
मृरजमुख बैठी कौशल्या तो औषध घुटने को।
अरे हाँ रे राजा पहिलो जो दियो है केकई, दूजो सुमित्रा
अरे हाँ रे राजा सिल धोई पीयो कौशल्या ने तो तीनों गरभ सींचे
केकयी के भरत, सुमित्रा के लक्षमण-शत्रुहन ए
कौशल्या जाये राजा राम जो तारनहार हुए!
अरे हाँ रे राजा कौशल्या के नबल निशान तो
हरि को जनम भये राम जनम भये!
केकेयी सूं अगड़ गड़ाऊँ सुमित्रा सूं चूनर ए!
कौशल्या सूं एक छत्र राज तो राम जनम भये हरि को जनम भये!

(83)

कृष्ण जन्म गीत

आज राति नंदनंदन प्रगटे, गोकुल बजत बधाई री!
रोहिणी नक्षत्र बुधवार भादों की रात,
योग लगन तिथि आईरी! गोकुल .....
गृह से सब बनिता बन के, मंगल गावत आईरी!
जैसे तैसे से उठि धाए, आनन्द उर न समाई री। गोकुल.....
चौवा चंदन और अरगजा, दधि कीमर्च चमकाई री
यमुलार्जुन वृक्ष उखाड़े, जसुमति सुतउइताई री
बन्दी जन गंधर्व गुण गावैं, सोभा वरनि न जाईरी!! गोकुल.....
चन्द्र सखी भजो बालकृष्ण छवि
हरि चरण न चित लाई री!! गोकुल.....

(84)

कृष्ण जन्म गीत

तीन लोक के नाथ मथुरा हरि जन्म लियो प्रभु, जन्म लियो!
भादों मास अंधेरी रात चन्द्रमा उदय भये,
लागो रोहिणी नक्षत्र कन्हैया अवतार भये,
मोहन अवतार भये! केसर तिलक लिलाट सांवरो मुकुट धरैं!
शंख चक्र गदा पदम मुरलिया अधर बंसुरिया अधर धरैं!! तीन लोक
पीताम्बर की कछनी काछे चतुरभुज रूप धरैं!
कानन कुंडल सोह, गले बिच हार गले बिच हार धरैं! तीन लोक
नटवर रूप देख देवकी सोच करे!
एक तो कर्म की हीन दूसरो दुःख और भये,
अदभुत रूप देखि वसुदेव चलि आए, लेहो बाल उठाए,
गोपाल उठाइ, नन्दघर पहुँचाए!! तीन लोक
खुलि गये झनन किवाड़, खुलि गयो नन्द दरबार!
पहरुवा सोई रहे!!

तट युमना जी के तीर, वसुदेव सोच करैं, कैसे उतरैं पार!
यमुना जल जोरि बहे!
तट युमना जी के तीर, शंख धुनि बाजि रही!
कृष्ण छुवाए पाँव, जमुना जल लौटि गये!
धन्य देवकी तेरो भाग्य, धन्य वसुदेव, जनम को पाप तरैं!
तीन लोक के नाम

(85)

झगुली गीत/अन्नप्राशन

अम्ब जो कहि अम्बन सूँ ए झगुली पतन सूं ए!
अरी माई चन्दन लगो है लिलाट तो लगत सोहावना ए!
अलगिल चन्दन कटाती पालकिया बुनाती न ए!
अरी माई रेसम बान बुनाती होरिलुवा के कारन ए!
अतलस सेज बिछाती आलन सारी तकियान ए!
अरी माई फूलन हार गुदाती तो लगत सुहावन ए!
राजा सोहे रामीचन्द्र लछीमन धनिया सीतादेही धनिया उर्मिली
बीच में बाला होरिलुवा जो लगत सोहावन ए!
राजा सोहे (पिता का नाम) धनिया जच्चा रानी बहू रानी!
उनके बीच में बाला होरिल बालो लगत सोहावन ए!
राजा हो महराजा तुम्हीं मेरे राजा!
अरे बाला रे होरिलुबा की झगुली पसीनवाँ से भीज रही!
अरे रानी ऐसा बोल मत बोलो!
झगुली मोलाऊँ सब साठ होरिलवा के कारन ए!
कहाँ से अतिलस मगाती, कहाँ की पत्तियाँ!
अरे माई कवन शहर को दरजिया जो लगत सोहावन ए!
दिल्ली से अतिलस मागती, बनारस की पत्तिया!
अरे माई शहर बरेली को दरजिया जो झगुली सिलावन ए!
कै लख लागें हैं मोती सवालख घुंगरोंन ए!
दस गज लागी है डोरी होरिलुवा की झगुली सिलावन ए!

राजा देखें रामीचन्द्र धनियाँ सीतादेही!
तो ठुमक ठुमक लाल सोवै पलना बीच लगत सुहावन ए!
(परिवार के पुरुषों के नाम)
जच्चा रानी सर्व सोहागन अटल सोहागन!
युग युग जीवे चिरंजीवी जीवे लाल!
तो लगत सोहावन नगरी सोहावन ए!

(86)

श्रीकृष्ण जन्म गीत

आनंद यशुमति मैया!
आज मेरो शुभ घड़ी भयो री कन्हैया!
कहाँ कन्हैया जी ने जन्म लियो है, कहाँ बजत बधैया!
मथुरा कन्हैया जी ने जनम लियो है गोकुल बजत बधैया!
आज मेरो शुभ घड़ी भयो री कन्हैया!
काहे ने जाये काहे ने खिलाये, काहे के कुंवर कन्हैया!
देवकी जाये यशोदा ने खिलाये, नन्द के कुंवर कन्हैया!
आज मेरो
काहे के खम्भ पालना झूले, कवन लेत बलैया!
सोने के खम्भ पालना झूले यशुमति लेत बलैया!
आज मेरो
हर हर गोबर मन्दिर लिपाऊँ गजमोती चौक पुराऊँ!
मोतियन चौक पुरैया!! आज मेरो
नन्द बाबाजी चौक चढ़ि बैठे, गोदी में कुंवर कन्हैया!
ब्रहमा वेद पढ़े तेरे द्वारे शंकर ध्यान धरैया!
नारद वीणा बजैया!
चन्दमखी भजो बालकृष्ण छवि प्रभु चरणन बलि जैया!
हरिचरणन बलि जैया! युग-युग जीवे कन्हैया!!
आज मेरो

(87)

बालक्रीड़ा गीत

कौशल्या के चारों लाल, दिन दिन प्यारे लगें।
पाँव में पैंजिनियाँ हाँ.....
छिन लाला खेले हाँ, बाबा के छज में!
छिन मैय्या की गोद, दिन दिन प्यारे लगें,
पाँव में पैंजिनियाँ हाँ.....
छिन लाला खेले हाँ, चाचा के छज में
छिन चाची की गोद, दिन दिन प्यारे लगें।
पाँव में पैंजिनियाँ हाँ.....
छिन लाला खेले हाँ, भैया के छज में,
वीरा के छज में, नाना के, मामा के मौसा के,
छिन भाभी की गोद, दिन दिन प्यारे लगें
पाँव में पैंजिनियाँ हाँ.....

तृतीय भाग

88 आठूँ—सातूँ के गीत

भादौ महिने के कृष्ण पक्ष की सप्तमी (अमुक्ताभरण सप्तमी) और अष्टमी को कुमाऊँ में आठूँ और सातूँ के रूप में मनाया जाता है। इसमें 'गँवरा' (गौरा) नामक देवी की स्थापना, पूजा और विसर्जन की परम्परा है। पिथौरागढ़ के शोर परगने के कुछ गाँवों में गँवरा के विसर्जन के अवसर पर 'हिलजात्र' नामक लोक-नाट्य दिखाया जाता है। यह एक माह तक चलने वाला आठूँ—सातूँ उत्सव भाद्रपद कृष्णपक्ष की पंचमी से शुरू होता है जिसे 'बिरूड़ पंचमी' कहते हैं। इस दिन अनाज भिगाकर उत्सव का श्रीगणेश होता है।

प्रत्येक गाँव में सभी महिलायें एक स्थान पर एकत्रित होकर गँवरा की पूजा के समय यह कथा सुनती हैं)

''यो बर्त जब कैलास पर्वत में शिवज्यू पारवती माता तपस्या कर छी तब बटिक चलि छ; यो डोरक बर्त बड़ो शुभ फल दीणी, सोहाग सम्पती, सन्तति दिणी छ। एक दिन दक्ष प्रजापति ले यज्ञ कर और शिवज्यूक अपमान कर दे, सब जाणीं वाँ न्यूत में जाण देख बेर सती लै वाँ जाण कि जिद कर दे। भौत मना करबेर नी मानी फिर शिवज्यू जाणै की आज्ञा दी दे। वाँ जैबेर शिवज्यूक भाग नि देख बेर सती भौत दुखी हैंगै। वी ले आपुंणि देह यज्ञ में त्याग कर दे। वी दिन बठे यो डोरक बर्त सब लोग करण लागीन और सबन ले आज दिन अग्नि पाक त्याग दे। यो शुभ बर्त शुरू कर दे। सब लोग घर घर में बिरुड़ पाँच अनाज मिलै भिगूनी। जै में गुरूंस, चाण, मटर, ग्यूँ, मास, सरसों, हल्दी, सुपारी, दूब डाल बेर भिगै दिनी। घर में सब लाल पिछौड़ साड़ी, आदि पैरि बेर और गहण पैरि बेर गौरा—महेश्वर की पूजा करनी! बर्त कि एक अदभुत काथ छ। यो काथ सबन लै ध्यान लगै बेर सुणन चैं—

''तो एक बिण भाट छी। वीक सात च्याल, सात ब्वारी छिन। घर में एकक लै सन्तान नीछी। उ भौत दुखी छी। एक दिन गंगा किनार नाण हीं जै रौं छयो वाँ भौत सुहागिलि सैणी नाण लागि रै छिन। हो बल। हो बल। बिण भाट ले पूछ यो की पर्व छ और की बर्त छ? हो बल! हो बल। और मैं केंले बता! सबन ले कयो—यो बर्त सती देह त्याग बटि चलि छ! बड़ो शुभ फल दिणीं छ। हो बल! होबल! यो सत्यकि डोरक बर्त जरूर करण चें। हो बल! हो बल! बिणभाट घर ऐबेर आपुणि बुड़ि छै कूंण लागो—बुड़िया! आज मैं बड़ी भलि बात सुंणि बेर आनूं। हो बल। हो बल! बुढ़िया लै बड़ी खुश हैगे। हो बल! हो बल! देर नी कर। जल्दि सबै ब्वैरिन बुला बिरूड़ भिजा, चौखंड दी जगा, चौक पुर, लाल कपाड़ पैर, गहण पैर, पैर हो! पैर। हो बल! हो बल!

बुड़िलू पैली एक ब्वारि थैं कय। वील एक गुद बिरुड़ मुख में धर दे, दूसरी लै उसै करौ, तीसरी लै, चौथी ले, पचें लै, छयां लै। हो बल! हो बल! आब एक सतें ब्वारी गोरूनाक् खर्क रूनेर भैं! ऊ घर बठे निकालीं भै। बिण भाट बुलै बेर ल्यायो। ब्वारी ब्वारी, छै ख्वार पड़ि गै छन। अब तू पति धर दे! नाइ-धोइ, चौखंड दी जगै, बिरूड़ भिजाय वी ले। चुल में तात पन्योल हालि बेर बिरुड़ धोइ, जिब्राड़ि चुणकन लागी झट डामि दे। हो बल! हो बल।अब बिणभाट ज्योतिषी देखूण हीं ग्यो वील कैं— यो पैल पौ मूलन में है रोछ। इज बाब को भूलि छ हो बल! हो बल!

बिणभाट दु:खी है ग्यो। ब्वारी ब्वारि! तेरो बालक भौत बीमार छ। तेरी इज सिरान बैठि रै छ। तू ज हो बल! हो बल! और बालो याई छोड़ वील उसै करि! वाँ जै बेर बाब ठीक देखि बेर, इज खीर पकूण देखि बेर खुशि हैगे। हो बल! हो बल! चेली चेलि, तू किलै ऐ छै! जल्दी जा खीर खा। सरसों ब्वेनी जाये। तेरो बालो हाथ ऐ जाल। उस्वे करि सरसों ब्वेनी गै। सरसों हरिय हैग्यो। नौल में हाथमुख ध्वेन लागी बाल लै गाल में हाथ डाल दुब हाथ आयो बल! होबल! होबल! तबै बाल में दुब लगूनन फिर डोर लगूनन। और ब्राह्मणन दक्षिण दी बेर सबन थैं आशीर्वाद लिन्हन! यो बर्तैकि महिमा! गौरा महेश्वर की जै!!

(89)
बिरुड़ी भिगाने का गीत

आवो सखियो बिरुड़ी भिगूंला!
आवो गोपियो बिरुड़ी भिगूंला!
लीपी घसोटी चौंक पुरूंला
चार कौना हो दियो जगूंला!
पंच विहड़ी ताँब की कलशः
ऐसी करी हो बिरुड़ी भिंगूला
गज मोती हो चौंक पिरूंला
आवो सखियो बिरूड़ी भिगूंला!

(90)
सातूँ गीत

मावकुड़ी की पूजा सइयाँ हो
कुवकुड़ी की पूजा धना मेरी!
कसि करी जूँला सइयां हो!
चीफली छ बाटी सइयां हो!
गहरी छ गंगा सइयां हो!
जग जोली तराला धना मेरी!
ऐसी करी जूँला धना मेरी!
बाहर रामीचन्द्र, लछिमन, लवकुश!
छाजा में सीता देही उरामिली बहुराणी!
कुकुड़ी की पूजा धना मेरी!

(91)
सातूँ गीत

लावो चेलियो कुकुड़ी का फूल!
लावौ चेलियो माकुड़ि का फूल तुमने
चेलियो कुकुड़ी प्यारी!
लावो गॅवरा हो कुकुड़ी का फूल!
लावो सरस्वती घुघटी का फूल!
लावो लक्ष्मी घघुटी का फुल!
आज आऊँ त भोल लेही जूँलो
बाबुल थें मांगुल दो हाथ पिछौड़ी!
ईजा थें मांगुलो दशमी की रोटी
लावो चेलियो.....

(92)
सातूँ गीत

पारन पातल हो बेटी ऐछ मैत?
पारन पातल हो गॅवरा ऐना मैत!
यो भूखी भादो हो, गॅवरा किया खाणी ऐछी!
जेठ ऊनी त उमीयाँ बुकूनी!
कात्तिक ऊंनी त सिरौला बुकूनी!
यो भूखी भादो हो, गॅवरा किया खाणी ऐछ!
पारन—पातल.....

(93)
आठूँ गीत

(1) दियौ बाबु हो, सुनु दियड़ी दैजो!
दियौ ईजा हो, सुनु दियड़ी दैजो!
दियौ भैया हो सुनु दियड़ी दैजो!
दियौ बोज्यू हो, सुनु दियड़ी दैजो!

(2) नि दीनु नन्दी हो, सुनु दियड़ी दैजो!
गाई गोठ तुम्हारा हो, बछड़ बछड़ होला!
धान खेतों तुमरा हो, पहाड़ पहाड़ होलो!
तुमरा बोज्यु हो चेली चेली होला!
लीजा नन्दी हो, सुनु दियड़ी दैजो!

(3) तुमरा बोज्यू हो चेला चेलो होला!
तुमरा बोज्यू हो, दयूँलो आशीष
भैया मेरा हो लाख बरीषा!
तुमन बोज्यू हो, अटल सुहाग!
दियौ बाबु हो!!

लीला गीत

94. श्रीकृष्ण दान-लीला

दो.- चलो सखी तहाँ जाइये, जहाँ बसत ब्रजराज।
गोरस बेचन हरि मिलन एक पंथ दो काज।।

चौ.- प्रभु पूरण ब्रह्म अखण्डा। जाके रोम रोम ब्रह्मण्डा।।
प्रभु सर्व गुण ब्रह्म कहाये। मथुराते वृन्दावन आये।।
जहाँ देव लोक मुनि जेते। सब गोप गुआलिनि तेते।।
देवकी सुत नाम धराये। बसुदेवहि रूप दिखावे।।
जब गोकुल इच्छा कीन्ही। बसुदेवहि आज्ञा दीन्ही।।
तित नन्द भवन पहुँचाये। तहाँ नन्द के लाल कहाये।।

छं.- जन्म लियो वसुदेव के गृह नन्द के बालक भयो,
छप्पन कोटि यदुबंश माया यूथ गोपी गवाल के,
श्रीकृष्ण के संग बहुत बालक गौ चरावन वन गये,
हरखि गावहि दान लीला सुनहि सज्जन कान दे।

चौ.- सब घर घर की बृज नारी। दधि गोरस बेचन हारी।।
मिलि यूथ मतो सब कीन्हा। यमुना तट मारग लीन्हा।।
आगे हरि धेनु चरावैं। मधुरे स्वर बेनु बजावैं।।
जहाँ बाट सबन की सोई। मुरली सुनि हरसित होई।।
सब घाट उपर चलि आई। पहिचान लियो यदुराई।।
एक बालक कहत पुकारी। तोहि सूझत नाहि गवारी।।

छं.- तोहि सूझत नाहिं गवारि गुजरी कृष्ण ठाकुर घाटके,
आय काह न करो विनती अजहुँ हैं बपति के,
हृदय समुझि विचारि ग्वालिनि हरि भले तुमहूँ भली।।
दान हेहुँ निवेरि ग्वालिनि हरि भले तुमहूँ भली।।

चौ. सुनि बात सबै मुसकानी। हम आज सुने हरि दानी।।
हम कौन कहाँ ते आई। हमको हरि चीन्हत नाहीं।।
तुम गोकुल की ब्रजनारी। तुम हो वृषभान दुलारी।।
तुमरे सिर गोरस भारी। हम हैं यमुना तट वारी।।
कुछ दान हमारो लागै, हँसिके मनमोहन मागे।।

छं.- तीन लोक में कौन जाने घाट यमुना तीर को।।
जात आवत कुन्जवन में रहत लाल अहीर को।।
दान दे वृषभान लाड़िलि सुयस जग में लीजिये।।
नंद को सुत जानि हमसे गर्व कबहु न कीजिये।।

चौ.- एक ग्वाल सखा मिलि घेरी। अलि का मुटुकी महतेरी।।
कोउ हाथ डारि दधि काढ़ै। तब द्वन्द चहूँ दिशि बाढ़ै।।
एक ग्वालिनि कहत रिसाई। प्रभु का तुम्हरे चित आई।।
कुछ मांगि दही वर लीजै। नई दान की रीति न कीजै।।
जब कंस राज सुनि पैं हैं। तुमहूँ को उपदेश पढ़ै हैं।।

छं.- कंसराज के राज में प्रभु नई रीति न कीजिये,
नन्द के घर द्वन्द उपजे दुःख परे तन छीजिये।
सदा आवत जात मथुरा दान हमसूँ लीजिये।
दही माँगत, छाछ दुर्लभ, नीर यमुना पीजिये।।

चौ.- अब ग्वालिनि कहि अस बाता। हंसि बोले त्रिभुवन त्राता
तुम तीन लोक महुँ देखो, हमको जनि मानुष लेखो।
हमही सब दैत्य संहारा एक का करे कंस विचारा।।
तुम कसको करहु गुमाना तेहि काल करो पिसयाना।
अब उग्रसेन भये राजा, हम ही अग नाहि निवाजा।
हमसूँ हटि वाद न कीजै, हँसि दान हमारो लीजै।

छं. जाको बेद पुरान गावै मनहि मन सोई करै।
पराधीन बलहीन सो नर, कंस के डर सो डरै।।
दही गोरस कौन बूझे देखि अभरन मोहनी।
जाड़ित हीरा लाल कंचन मांग मोतिन सोहनी।

चौ.- कित मोतिन माँग विराजै, कित पायल नुपूर बाजै।।
कित कंठ रतन की माला, हीरा मनि गुथ नन्दलाला।।
बाजू वंन्द कंचन सोहै, नक बेसर सो जग सोहै
सिर बेनि गुथी बहु भाँती, तेहि लाग रतन की पाती।।
मनि मानिक कुंडल सोहे, मथुरी कटि किंकिणि बोले।।
कित पाट पीतम्बर झाने, कित सोहत भूसण काने।।

छं.- हृदय देखि विचारि ग्वालिनि कुन्जवन की बाट है।
लूटिले कोई सबै आभूषण को तुम्हारे साथ है।।
यहाँ सबन को दान लागे हठ न कीजै सुन्दरी।
कंस के हम डरत नांही सुनत बात सबै डरी।।

चौ.- एक कंगन जब ले दीन्हों हरिसूं विनती बहु कीन्हों।
प्रभु प्यारे बहुत कुछ लीजै, अब पार सबन को कीजै।
एक ग्वाल करी चतुराई, तिन औंघट नाव छिपाई।
ओरे आप कृष्ण जी से भाखा, प्रभु नाव यहाँ कोउ राखा।
अकुलाय उठी संग साथी, तहाँ सांझ परी यहि भांती।
तब कृष्ण सबन समझावै, अब नाव कहाँ कोई पावै।।

छं.- औंघट घाट गंभीर यमुना रात में नहिं पथ चलो।
बाघ सिंह बटमार वन में को तुम्हें बोले भलो।।
झूठ माया मोह परिजन सपन हैं दिन चार के।।
कोउ काहू के संग नांही अन्त देखि विचार के।।

चौ.- सुनि ग्वालन के मन भाना, धृग जीवन कहि जग जाना।
धृग जीवन धन परिवारा, तुम हो प्रभु नाथ हमारा।
अब चरण शरण प्रभु दीजे, तन मन अपनो करि लीजै।
अब चरण शरण प्रभुलागी, हम हैं प्रभु परम सुभागी
अब राति परी अधियारी, जन छाड़िये कंत मुरारी।

छं. - जन्म हमरो सुफल कीने, हरिके हम चरनन परी।
कुल की लाज गवाँय ग्वालिनि जन्म सेवा सब करी।

हरस मोहन संग झिलमिलि मणिन कर दीपक धरे।
श्रीकृष्ण राधे यूथ ग्वालिनि कुंज वन क्रीड़ा करे।।

चौ.- तब रास मंडल प्रभु ठाना, सब गोपिन के मन माना,
कोउ गंध धूप ले आवें नैवेद्य की मुक्ति बनावें।
तहाँ राधे जी पान खिलावें, कोउ माथे चँवर डुलावें।
कोउ ताल मृदङ्ग बजावें, कोउ आरति मंगल गावें।
नृत गीत नाद प्रिय बानी, मधुरे धुनि वेन उमगानी।
कर ताल बाजकी होऊ, कृष्ण राधिका सोऊ।

छं.- श्रीकृष्ण घंट बजाय आरति गग्विन मिलि सेवा करे
नर जो गावहि दान लीला सुनहि जो चित लावहीं
सोइ पावहिं प्रेम भक्ति विष्णु लोक सिधावहीं।

श्री भागवत लीला

वसुदेव ने देवकी को बिवाये, ब्योम से माया ने शब्द सुनाये,
अष्टम गर्भ श्रीकृष्ण के कहाये, कंस मरन की भाषी सुनाये।।
मुरलीधर कान्हा आये, बन्सीधर कान्हा आये।
एक समय देवकी के घर जन्म लियो है, वसुदेव बन्दी छुड़ाये,
जाय जमुना जी के पाँव पड़त है, गोकुल बजत बधावा, वृन्दावन
धेनु चराये।। मुरलीधर कान्हा आये बन्सीधर कान्हा आये।।
देवकी के सातों गर्भ कंसने छुड़ाये, अष्टम गर्भ श्रीकृष्ण के कहाये,
देवकी के हस्त बढ़ाये, वसुदेव देवकी बन्दी कराये,।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
भादों मास तिथि अष्टमी बुधवार रोहिणी नक्षत्र आधी रात में जन्म लियो है
ले वसुदेव गोकुल पहुँचाये, यशोदा सुता देवकी घर आये।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
कंसने सबहि लोग जगाये कन्या पकड़ घर लाये,
दोनों हाथ असम्भव मारे, कन्या ने बिजली रूप धराये।।

बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
कंस ने फिर-फिर पूछ कराये, जाय जाय मथुरा के बालक मारे।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
वसुदेव नंद गोकुल पहुँचाये, कंस ने पूतना पठाये।
बालक रूप ने पान कियो बिस पूतना के प्राण हराये।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
कंस ने बलि को विप्र पठाये यशोदा उत्सव सुनाये,
लाय जमुना जल भरि के यशौदा बलि को विप्र कहाये,
कृष्ण ने दूध के भंडार खुलाये, बलि को मुँह छिपाये।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
गाड़ी के नीचे कृष्ण ने यशौदा अंदर आई मारी लात सगरी को उठाये,
गाड़ी को उल्टी बनाये, सूर्य देव मंडप को बनाये।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
अंग विभूति ओड़ मृग छाला शिवयोगी यशौदा घर आये
बालक डर के, अन्दर ले आये लेकर भिक्षा आई यशौदा
तैंने मेरे गिरधर गोपाल डराये।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
नालूँगा तेरी कन्चन भिक्षा सुत के बदन दिखाये,
अन्चल छोप के लाई यशौदा सुत के जाय दिखाये।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
ऐरी यशोदा तेरे कन्हैया ने घर घर दयो लुटाये,
उठके यशोदा ने बांधो कन्हैया दोनों जुगल यक्ष,
कुबेर सजा से मुक्त कराये।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
ढूँढन निकसी मात यशौदा गलिन-गलिन फिराये,
कान्ह माधो फिर वन चलि आये।।
बन्सीधर कान्हा मुरलीधर कान्हा आये।।

दही भात कृष्ण ग्वालन संग खाये मोहन मुरली बजाये,
ग्वाल-बाल सब आनन्द कराये।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
काली विष डारो यमुना में ग्वारन बाल विहार कराये,
काली नाग के नाथे श्रीकृष्ण ग्वाल बाल आनन्द कराये।।
बन्सीधर कान्हां आये मुरलीधर कान्हां आये।।
मोर के पीछे पंख धरो है शीश को कानों में कनकारी,
पीतपात वैजयन्ती माला पीतपात पीताम्बर पहिराये।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
कृष्ण ने सबहि गोपि बुलवाई कीर्तन देवी की पूजा कराई,
गोपिन देवी की अरज करत है कृष्ण पति करि पाऊँ।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
एक समय कृष्ण वन में गऊँ चराये ब्रह्मा ने बछिया चुराये।
माया रूप की बछिया बनाई ब्रह्म स्तुति करि आये।
गइया ग्वाल गोकुल पहुचाँये।
बन्सीधर कान्हां आये मुरलीधर कान्हा आये।।
जब इन्द्र ने कोप कियो ब्रज ऊपर मेघ जुटाये,
गिरवर, नखपर धारो श्याम ने मथुरा नगर बचाये।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हां आये।।
कृष्णने सबहि गोपि बोलाई गोपिन रास रचाये, तनमन तपन बुझाये,
गोपिन गृया को गर्भ कराये हो, कृष्ण ने अपने देह छिपाये।
बन्सीधर कान्हां आये मुरलीधर कान्हा आये।।
जमुना किनारे बन्सी बजावै बृज की नारी सबै चलि आवै
तुमसे दर्शन पाय के स्वामी हमरो तेज बढ़ावै।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
काहे के मुँह पर गडुवा लगावै काहू कि बहिया मरोरे,
काहू के अंगिया की तनिया टुटाई, काहे के सिर की गागर तोड़ी,
काहू कि चीर चुराई। मुरलीधर कान्हा आये बंसीधर कान्हा आये।।

लेकर चीर कदम्ब चढ़ि बैठे गोपिनि अंग छिपाये,
चीरन तुम्हारि तबै हम देंगे हो जावो जलसे न्यारी।।
बसीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
कालिन्द्री देह धरे नहिं आये बलदेव रीस रिसाये,
एक हाथ लिये जमुनाजल खेंचिके अपने चरणों में धराये।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
उठि के यशोदा राधा घर आई कृष्ण पकड़ घर लाये,
इतनी देर तुम क्यों नहिं आये इतने पदार्थ क्यो नहिं खाये,
कौन सखी विरमाये। मुरलीधर कान्हा आये बन्सीधर कान्हा आये।।
जब व्रज तेज कियो जादू नंद नन्दन कंस ने पकड़ मगाये
तूहों क्रूर अक्रूरतज दयूं मैं रंग महल से पकड़ि मगाये।।
मुरलीधर कान्हा आये बन्सीधर कान्हा आये।।
कपड़ा धोय के धोबी लाये सो धोबी मोहि को पहनादे,
राजा के कपड़े तोहिं ना दूँगा धोबी के सिर छिनाई, अन्तरलोक पहुंचाई,
कपड़े अपने अंग पहिनाई कान्हां माधोवन चहिन आये।।
बंशीधर कान्हां आये मुरलीधर कान्हां आये।।
चंदन तो कविराज घंसि लाये, मालिनि लाय पुष्पन की माला,
चन्दन तो अपने अंग पहनाये। कविजा रास रचाये कान्हां
माधोवन चहिन आये। बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हां आये।।
चरण-मुष्टि कहै दोनों भय्या रणभूमि पर आये,
चरणसृष्टि का वध कीन्हे, केशि के प्राण हराये,
रंग महल से कंस को खीचि मँगाये।।
बन्सीधर कान्हा आये मुरलीधर कान्हा आये।।
पहले गजेद्रा हस्थि को मारा सूँड पकड़ के घुमाये, केश पकड़
हरि ने कंश पछाड़े दु:ख देवकी के हराये, तन को बैकुंठ कराये।।
मुरलीधर कान्हा आये बन्सीधर कान्हा आये।।
वसुदेव नन्द आनन्द कराये देवकी, यशोदा आनन्द सुनाये,
मथुरा वृन्दावन गोकुल नगरी घर घर आनन्द वधावै, उग्रसेन को
राज्य दिलाये।। मुरली धर कान्हा आये बन्सीधर कान्हा आये।।

कंस की रानी पिता घर आई विश्रामी विश्राम कराये,
मोर के पीछे पंख धरो है को कानों कनकारी,
राधा, रुकमणि चंवर डुलावे देव मुनि अस्तुति करावै।।
मुरलीधर कान्हा आये वन्सीधर कान्हा आये।।
पारिजात पुष्प नारद मुनि लाये, कृष्णने रुकमणि हस्त बढ़ाये,
सत्यमामा जब रोक किया है पारिजात पुष्प इन्द्रलोक से लाये,
सत्यभामा आंगन हि लगाये।।
मुरलीधर कान्हां आये बन्सीधर कान्हां आये।।
गिरि में विहार कराये रेवत गिरी की सुता रेवती को बलदेव ले आये,
सिंह प्रसिंह राजसिंह ने मारा जामवन्त सिंह के प्राण हराये,
मणि को उठाकर लाये, श्रीकृष्ण के चरण धराये।।
मुरलीधर कान्हां आये बन्सीधर कान्हा आये।।
काली नाग से युद्ध भयो है डर के गुफा पर आये, काली नाग पीछे
लग आये तिन को देख श्रीकृष्ण जी ने अपने मुख से भस्म कराये
मुचकुन्द की नींद जगाई।।
मुरलीधर कान्हां आये बन्सीधर कान्हां आये।।
चारों वेद चतुरदस विद्या गुरु ने कृष्ण पढ़ाये,
गुरु दक्षिणा तुम लीजै स्वामी पुत्र को उठा गुरु के चरण में धराये।।
मुरलीधर कान्हां आये बन्सीधर कान्हां आये।।
दुर्बल गात सुदामा आये, मेरो चटभाई कहाये
तीन मुट्ठी तंडुल के लाये, तिनको देखि सुदामा श्रीकृष्ण, आनन्द कराये।।
मुरलीधर कान्हा आये बन्सीधर कान्हा आये।।
वाराह रूप वसुन्धर धारा बोध में मोह कराये कलिमें वृक्ष अङ्कुर कराये,
मच्छ रूप से अंगासुर मारा, कूर्म ने धरणि धारा,
वामन रूप ने बलि पाताल पठाये, नरसिंह रूप, हिरण्यकुश मारे।।
मुरलीधर कान्हां आये बंसीधर कान्हा आये।।
परशुराम रूप से क्षत्री संहारे, राम रूप से रावण वध कराये,
कृष्ण रूप प्रभु कंस पछाड़े।
मुरलीधर कान्हां आये मुरलीधर कान्हां आये।।

मोहवधी में कलि को बनाये विश्वकर्म को बुलाये,
मोत्यों मणिकन की द्वारिका बनाई, व्योम सूँ इन्द्र की अप्सरा आई,
थयूया थयूया नाच कराई सब गोपियन को मान घटाई।।
मुरलीधर कान्हा आये बन्सीधर कान्हा आये।।
दन्तवक्र शिशुपाल दोनों दैत्य कहाये, रणभूमि पर आये,
सौ अपराध श्रीकृष्ण के कहाये
तिन दोनों की शीष उखाड़ी, उत्तर लोक पहुँचाये।।
मुरलीधर कान्हा आये बन्सीधर कान्हाँ आये।।
अनिरुध सपनऊ में घर आये, बाणांसुर ने पकड़ि मँगाये,
कृष्ण हरि को युद्ध भयो है उनको उठा रंग द्वारिका पर लाये,
तिनको भोग विलास कराये।।
मुरलीधर कान्हा आये बन्सीधर कान्हा आये।।
असम्भर दैत्य ने काम चुराये राम ने रति को बुलाये,
असम्भर दैत्य की शीष उखाड़ी, अन्तर लोक पहुँचाये,
रति को उठा रंग द्वारिका लाये, तिनको भोग विलास कराये।।
मुरलीधर कान्हां आये बन्सीधर कान्हां आये।।
अर्जुन, गोपी द्वारिका पर आये भिल्लने घेर लगाये ,
गोपिन जल के समान भई हैं युधिष्ठिर राजा चारों भाई कहाये।
मुरलीधर कान्हां आये बन्सीधर कान्हां आये।।
भागवत लीला कान्ह कुंवर की वेणी राग बनाई,
तुम्हरी चरण की वंदे स्वामी मोक्ष हमारे कराई,
भागवत लीला जो कोई गावें उनको बैकुण्ठ कराई,
तिनको बैकुण्ठ कराई।।
मुरलीधर कान्हा आये बन्सीधर कान्हा आये।।